भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

शब्द रंजन

1

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 11 | अंक 20 | उदयपुर रविवार 01 नवंबर 2026 | पेज 08 | मूल्य 5 रू.

लोक में लक्ष्मी का भावांकन

-डॉ. तुक्तक भानावत

धन की देवी लक्ष्मी की मान्यता भारतीय लोकजीवन में कई रूपों में प्रचलित है। लक्ष्मी को प्रतीक रूपों में भी लोकमानस ने महत्व देकर उसकी अभ्यर्थना की है। लक्ष्मी अर्थ देने वाली है तो सरस्वती विद्या दात्री है। दोनों आवश्यक हैं। जीवन जीने के लिए अर्थ जरूरी है पर उसकी सीमा जरूरी है। इसीलिए हमारे यहां अपरिग्रह को महत्वपूर्ण माना गया है। जीवन के लिए जितना आवश्यक है उतना संचित किया जाय, शेष का उपयोग परमार्थ के लिए किया जाय। लक्ष्मी और सरस्वती की तुला समभावी रहे पर ऐसा होता नहीं, यही कारण है कि हमारे यहां धनकुबेर भी हैं और विद्या वाचस्पति भी। अर्थाभाव से पिटते-सिकुड़ते जन भी और निरा मूर्ख नासमझ भी। यह झमेला ही है।

गज लक्ष्मी :

लक्ष्मी का एक नाम गज लक्ष्मी मिलता है। विवाहोत्सव पर घर की दीवालों पर जो चितराम कोरे जाते हैं उनमें लक्ष्मीजी के दोनों ओर हाथी सूंड उठाये या तो लक्ष्मीजी को पुष्पहार चढ़ाते मिलेंगे या फिर कलश से जल का अभिषेक करते हुए। हाथी का यह अंकन लक्ष्मी के साथ जुड़ाव के कई अर्थ-बोध का सूचक है। यों भी हाथी धरती पर सबसे अजूबा किंतु शुभ-मंगल का प्रदाता माना जाता है। लक्ष्मी के साथ उसका जुड़ाव धन की शुभ और शुभ्र परिणति का सूचक है।

ऋद्धि-सिद्धि दात्री :

लक्ष्मी की ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि देनेवाली देवी के रूप में दीपावली को सर्वत्र पूजा की जाती है। घरों की लिंपाई-पुताई कर दीवाली से पूर्व गृह-लछमियां सब ओर साफ-सफाई युक्त स्वच्छ परिवेश प्रदान करती है। मान्यता है कि लक्ष्मीजी का वास ऐसे ही घरों में होता है जहां गंदगी की कोई हवा तक नहीं मिलती हो।

लक्ष्मी के स्वागत में बाहर से लेकर भीतर तक प्रतीक रूप में लक्ष्मी के पगल्ये, सातिये तथा दीपक के आकर्षक मांडने मांडे जाते हैं। दीवाली पर लक्ष्मी का अंकन बनाया जाता है जो थापा कहलाता है। इस थापे की विविध मिष्ठान्नों से पूजा की जाती है। इसी के साथ लक्ष्मी स्वरूप रूपये पैसे, गहनेगांठे तथा उस धन की भी पूजा होती है जो भंडारियों, तहखानों अथवा आल्योंगाल्यों में गाड़ रखा होता है। घी का अखंड दीपक जला दिया जाता है। थापांकन की जगह अब मोटे कागज पर चितेरों द्वारा बने पाठे मिलने लग गये हैं जो लगा दिये जाते हैं।

लोककथा में लक्ष्मीजी :

पूजा के समय लक्ष्मीजी से संबंधित कथा-कहानियां कही जाती हैं। एक कहानी के अनुसार एक गरीब ब्राह्मण के चारों लड़के प्रतिदिन मांगने जाते और जो कुछ मिलता, घर के चारों कोनों में अलग-अलग चूल्हों पर अपना भोजन पकाकर खाते। उसी गांव में एक ब्राह्मण ने अपनी कन्या का विवाह इस ब्राह्मण के बड़े लड़के से कर दिया। वह बहू सुशील और समभावी थी। उसने चारों की एक रसोई कर वातावरण बदल दिया। सभी परम संतोषी थे।

दीवाली के दिन बहू ने पूरे घर की साफ-सफाई की। टूटे फूटे बर्तन गांववालों ने जितने भी अपने घरों से निकाले, बहू ने उनको अपने घर लाकर जमा कराये। उधर राजा की रानी का हार खो गया। चील ने उसे लाकर उन बर्तनों में डाल दिया जो बहू के हाथ लगा। राजा ने पूरे गांव में हार खो जाने की डूंडी पिटवाई। बहू ने घर के लोगों से कहा, हार दूंगी पर शर्त रखी कि दीवाली के दिन पूरे गांव में एक भी घर में दीपक नहीं जलेगा। गांव वालों के साथ राजा ने भी उसकी शर्त मानी। बहू ने एक टोकरी के नीचे दीपक जलाकर रख दिया। रात को घबराई हुई लक्ष्मी आई।



बहू को किंवाड़ खोलने को कहा। बहू के किंवाड़ खोलते ही लक्ष्मी की निगाह उन टूटे-फूटे बर्तनों पर पड़ी जो सोने के हो गए। राज परिवार सहित गांव वालों ने जाना कि ब्राह्मण के घर लक्ष्मीजी टूटमान हुई हैं।

सुहाग का छींटा :

एक अन्य कथा में सूरजनारायण प्रतिदिन दुनियां को जगाकर प्रकाशित करने आते हैं। इसका पता रानादे को नहीं था कि वे कहां जाते हैं। एक दिन उसने हठ पकड़ ली तो सूरजदेव उसे भी साथ ले गए। इसका पता पूरे जहान को लग गया। छोटी बस्ती की सारी महिलाएं जैसी थीं वैसी घरों से निकल रानादे के दर्शन करने उमड़ पड़ीं। बड़े घरों की सजधज कर देर से निकलीं तब तक रानादे सबको कुंकुम् का छींटा देकर सुहागिन रहने का वरदान दे चुकी थीं। जो देर से पहुंची वे बचाखुचा आधा-अधूरा छींटा ही ले पाईं। परिणाम यह हुआ कि जिनके कुंकुम् का पूरा छींटा लगा वे आजीवन सुहागिन बनी रहती हैं। एक पति के निधन के बाद उनमें नाता प्रथा होने से वे दूसरा पति कर लेती हैं और आधा-दूधा छींटा लगा वे विधवा बनकर जीवन काटती हैं।

लक्ष्मी वाहन उल्लू :

उल्लू वैसे तो अंधेरे का स्वामी और अज्ञान का प्रतीक माना जाता है किन्तु लक्ष्मी के वाहन के रूप में इसकी लोक मान्यता है। ऐसा कहा जाता है कि अज्ञानी के पास लक्ष्मी का वासा अधिक होता है कारण कि वह उसका उपयोग नहीं कर पाता।

जितनी उसके पास है उसे ही पकड़े अथवा लुकाये रखता है। वह कंजूस भी अधिक होता है। दीवाली की घनी अंधेरी रात में ऐसे ही घरों में कभी-किसी उल्लू की पहुंच हो गई जिसने गृहस्वामिनी को लक्ष्मीजी के पदार्पण का एहसास करा दिया। दीवाली की रात उल्लू-दर्शन बड़ा शुभकारी माना जाता है। लक्ष्मी को पाने वाले उसके वाहन को पाकर, दर्शनकर धन्य हो जाते हैं।

धर्माचार्य और पंडित भी दीवाली की रात को लक्ष्मी पूजा के साथ उल्लू की पूजा आवश्यक मानते हैं। इससे पूरे वर्षभर ही घर में सुख शांति के साथ-साथ समृद्धि बनी रहती है। दीवाली की अंधेरी रात में उल्लू की पूजा कर तांत्रिक क्रिया करने वाले शक्तियां प्राप्त करते हैं। ये शक्तियां तंत्र के रूप में कार्य करती हैं। मुख्यत: मारक विद्या के रूप में इसका उपयोग किया जाता है जिसे ठीक नहीं समझा जाता। किसानों के लिए उल्लू बड़ा उपयोगी माना गया है जो रात्रि में चूहों का शिकार कर उनकी फसल बचाये रखता है। सांप तथा बाज तो दिन में ही चूहों का शिकार करने में सक्षम होते हैं। उल्लू ही रात का राजा बना रहता है। ऐसा भी कहा जाता है कि ऋषि मुनियों ने धन के प्रति अनास्था पैदा करने के लिए लक्ष्मी के साथ उल्लू को जोड़ दिया अन्यथा प्राचीन शास्त्रों में लक्ष्मी के वाहन के रूप में उल्लू का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

महालक्ष्मी मंदिर :

उदयपुर में कोई चार सौ वर्ष पूर्व महाराणा शंभूसिंह ने भटियानी चौहट्टा में महालक्ष्मीजी



मंदिर का निर्माण करवाया। यह अपने ढंग का एकमात्र मंदिर है जहां प्रतिवर्ष धनतेरस से भाईदूज तक विशेष उत्सव मनाया जाता है। सभी दिन दर्शनार्थियों की लंबी कतार देखने को मिलती है। महालक्ष्मी माता श्रीमाली समाज की कुलदेवी भी है। इसी समाज ने देवी की नियमित सेवा-पूजा का जिम्मा ले रखा है।

दीवाली के दिन सिंह लग्न में होने वाली पूजा का विशेष महत्व होने के कारण सुबह पांच बजे से ही भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। एक घंटे तक कपाट बंद रहने के पश्चात हर समय देवी के दर्शन खुले रहते हैं। सिंह लग्न की पूजा पूरे वर्षभर भक्तों को सुखी, समृद्धिमय रहने तथा सर्व कष्टों से मुक्ति देने वाली मानी जाती है।

प्रकाश द्वारा पुरखों की अगवानी :

दीवाली का त्यौहार मुख्यत: धनतेरस से भाईदूज तक मनाया जाता है। ये पांचों दिन प्रकाश के होते हैं। प्रकाश द्वारा पुरखों की अगवानी की जाती है। त्रयोदशी को उनके स्वागत में दीपक जलाये जाते हैं। लक्ष्मी का आह्वान पांचों दिन का है। देवी-देवता भी धरती पर प्रकाश रूप में ही उपस्थिति देते हैं इसलिए प्रकाश के माध्यम से उनकी अगवानी हो जाती है।

जब पुरखे, लक्ष्मी तथा देवी-देवताओं का आगमन होता है तब उनके लिए नाना भांति के मिष्ठान्न भी जरूरी है इसलिए इस दिन नये बर्तन खरीदकर लाने की परंपरा बनी। इन बर्तनों में सभी अलौकिक अतिथियों के लिए भांति-भांति के स्वादिष्ट पकवान तथा पेय तैयार किए जाते हैं और नये-नये बर्तनों में सजाये संवारे जाते हैं ताकि सभी का मनभावन आतिथ्य हो सके। इसलिए नये पात्रों में नये निराले व्यंजन के साथ महिला-पुरूष सभी नये परिधान भी धारण करते हैं।

मकानों की साफ सफाई और मांडना युक्त परिवेश देकर उन्हें भी नव्य-भव्य बना दिया जाता है। यह नव्यता-भव्यता मुख्यत: भावनाजनित होती है। गरीब हो चाहे अमीर सभी अपनी-अपनी भावना से सभी देवताओं और पुराखों के आगमन एवं उनके स्वागत, अर्जन अनुष्ठान के लिए सर्वप्रकारेण उत्साहित एवं उल्लसित रहते हैं। यह भाव समतामूलक समाज के श्रेष्ठतव का भी प्रतीक है।

लोक में यह मान्यता बड़े प्रबल रूप में मिलती है कि लक्ष्मी का पदार्पण सर्वथा जरूरी है और लक्ष्मी के लिए किसी पात्र एवं पकवान की भव्यता तथा श्रेष्ठता आवश्यक नहीं है। वह तो भावना की भूखी होती है और कभी भी किसी समय बिना कोई दिखावा किए, भनक दिये अपनी उपस्थिति दे सकती है इसलिए जो भोग बनाये जाते हैं और जो पात्र खरीदकर लाये जाते हैं वे घरेलू उपयोग में ले लिए जाते हैं।

हठड़ी : लक्ष्मी का भोग :

लक्ष्मी के भोग-पात्र के रूप में मुख्यत: राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में हठड़ी तैयार करने की परंपरा है। यह हठड़ी लड़के के जन्म-वर्ष में आने वाली प्रथम दीवाली को उसके ननिहाल से आती है। सफेद मिट्टी तथा कागज-कुट्टे-लुगदी के मिश्रण से तैयार की जाने वाली हठड़ी बड़ी कलात्मक और मनमोहनी होती है। यही हठड़ी प्रतिवर्ष आनेवाली दीवाली को लीपपोत, नया परिवेश देकर लक्ष्मी के भोग के रूप में काम में ली जाती है।

लगभग दो-तीन फुट ऊंची और आधे से एक फुट तक चौड़ी सम भुजाओं वाली हठड़ी रैकनुमा होती है। लड़की के जन्म पर हठड़ी लाने का रिवाज नहीं है। परिवार के सभी पुरूष सदस्यों की अपनी-अपनी पृथक हठड़ी जब इकट्ठी हो जाती है तो दीवाली पर पूरा कक्ष ही इन भाव भरी हठड़ियों से पट जाता है। इन हठड़ियों की शिल्पगत उत्कृष्टता देखते ही बनती है।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

राष्ट्र की एकता और अखंडता के शिल्पी,
लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी
की जन्मशति पर कोटि-कोटि नमन



राष्ट्रीय एकता दिवस

31 अक्टूबर 2026

की हार्दिक शुभकामनाएं

लौहपुरुष सरदार पटेल जी ने अपने अटूट संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति से भारत की एकता की नींव रखी। आज का राष्ट्रीय एकता पर्व हमें उनके आदर्शों पर चलने और संकल्प दोहराने का अवसर देता है।

भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

राम के आगमन और महावीर के महाप्रयाण से जुड़ा दीपमालिका महापर्व

- संजीव जैन

'आओ मिलकर के दीपमालिकाओं से सजा,
दीपावली का त्यौहार मनाएँ।
भगवान राम व महावीर के जीवन से ले प्रेरणा,
अपना जीवन हम गुलज़ार बनाएँ।।'

सनातन धर्म के सर्वोत्कृष्ट त्यौहारों में दीपावली का त्यौहार सिरमौरता के स्थान पर विराजमान है। वैसे तो सारे ही त्यौहार लोग आत्यंतिक हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं मगर जब बात और नाम दीवाली या दीपाव?ली महापर्व का आता है तो सभी के चेहरे पर एक अलग ही खुशी, उमंग, उत्साह, जोश व आनंद का रंग देखने को मिलता है। दीपावली के साथ सभी की भावनाएँ, आस्थाएँ, श्रद्धाएँ, कामनाएँ एवं प्रार्थनाएँ जुड़ी हुई हैं।

जितनी खरीदारी व उपहारों का आदान-प्रदान इस त्यौहार पर किया जाता है उतना अन्य किसी त्यौहार पर नहीं किया जाता। लोग नए कपड़े, घरेलू सामान, गहने, वाहन और भी अन्य कई प्रकार की वस्तुएँ दीपावली के उपलक्ष्य में खरीदते हैं।

शहरों के बाज़ार दुल्हन की तरह सजे हुए होते हैं, बेशुमार रौनक बाज़ारों में होती है; भीड़ ऐसी कि बन्दे के ऊपर बन्दा चढ़ा दिखाई पड़ता है। पूरा माहौल ही दीपावलीमय दिखाई देता है। इस छोटी-सी झलक से ही दीपावली की व्यापकता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

दीपावली का त्यौहार सनातन यानी हिन्दू धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म व आर्य समाज के साथ भी जुड़ा हुआ है। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का महाप्रयाण दीपावली के दिन हुआ था । सिक्ख धर्म के कई प्रसंग जैसे- स्वर्ण मंदिर की नींव और छठे गुरु श्री हरगोबिन्द साहबजी की जेल से रिहाई भी दीपावली के साथ जुड़े हुए प्रसंग हैं।

यहाँ पर मैं मुख्यतया, हिन्दू व जैन धर्म में दीवाली के महत्व पर प्रकाश डालने की कोशिश करूँगा। चौदह वर्षों का वनवास पूरा करके कार्तिक अमावस्या को भगवान श्री रामचन्द्रजी अयोध्या वापिस आए थे। लोगों ने भगवान के वनवास की अवधि पूर्ण करके वापिस अयोध्या आने की खुशी में घी के दीयों की दीपमालिकाओं से अयोध्या ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष की उस अमावस्या की काली रात को जगमगा दिया था।

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीजी ने इस दिन मोक्ष प्राप्त किया था। इस पर्व पर जहाँ भगवान श्रीराम का अयोध्या में आगमन है तो वहीं भगवान महावीर का इस दुनिया से महाप्रयाण है। दोनो ही प्रसंग आनंद और हर्ष के द्योतक हैं। भगवान महावीर स्वामी के महाप्रयाण के बाद गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

एक ने बाहरी जगत में उजाला फैला दिया तो दूसरे के आत्मा में प्रकाश फैलाया था। एक भगवान श्रीराम का आगमन बाहरी खुशी को प्रकट करता है, भगवान महावीर का महाप्रयाण आत्मानंद का बोध करवाता है। जिस प्रकार दीपमालिकाओं के दीये बाहरी अंधकार को हर लेते हैं उसी प्रकार भगवान की शिक्षाएँ आंतरिक अंधकार को हर लेती हैं।

राम के अयोध्या का सिंहासन पाया था तो महावीर ने सिद्धासन पाया था। दोनों का जीवन कष्टों से परिपूर्ण था, दोनों के ही सिद्धान्त सभी के लिए कल्याणकारी हैं, दोनों का ही जीवन सत्य एवं साधना से परिसिंचित था। दोनो ही महापुरुषों के माता-पिता की आज्ञा शिरोधार्य की थी।

राम ने माता-पिता की आज्ञा से वनों की ओर प्रस्थान किया था तो महावीर ने माता-पिता के रहते संसार नहीं छोड़ने का निर्णय लिया था। दोनों ही महापुरुष साधनामार्ग पर चले। एक ने बाहरी युद्ध में विजय प्राप्त की तो दूसरे ने आत्मयुद्ध में विजय प्राप्त की। दोनों ने हो अपने कार्यों द्वारा लोगों का कल्याण किया।

दीपावली के पुण्यशाली महापर्व के पुण्यावसर पर में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्रजी एवं शासनेश प्रभु भगवान महावीर स्वामीजी के परम पावन पाद-पंकरुहों में अपने हृदय की अनंतानंत गहराइयों से अपनी आस्थाएँ प्रकट करता हूँ, अपनी भक्ति प्रस्तुत करता हूँ और आत्यंतिक उच्च भावों में भरकर वंदन-नमन- अभिवंदन करता हूँ ।

दोनों ही महान आत्माओं के लिए कुछ पंक्तियों में मेरे मनोभाव इस प्रकार हैं-

एक राम है, एक महावीर है,
अंतर क्या दोनों भगवानों में है।
दोनों ही क्षत्रिय राजकुंवर,
माता-पिता के राजदुलारे है।।
दोनों ने घर छोड़ निज-पर कल्याण किया,
अंतर क्या दोनों के कामों में है।
हमारी आस्था के दोनों आधार हैं,
अंतर क्या हमारी श्रद्धाओं में है।।
संजीव के मन में दोनों समाए,
अंतर क्या उसके भावों में है।।
एक राम है, एक महावीर है,
अंतर क्या दोनों भगवानों में है।।

इंदिरा तो इतिहास बन गईं

- वेदव्यास

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को जानने की पहली पुस्तक जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखे गए पत्रों का वह संकलन है जिसे पिता के पत्र पुत्री के नाम (1931) बहुतों ने पढ़ा है। नेहरू के समय पर उनके बचपन में यह लिखे गए और पत्र इस बात की साथी है कि कोई एक पिता अपनी पुत्री को कैसा देखता और बनाना चाहता है। इंदिरा गांधी इसीलिए जवाहर लाल नेहरू का सपना थीं।

19 नवंबर, 1971 को इलाहाबाद में जन्मी इंदिरा गांधी का यह पहला सौभाग्य था कि तब उनकी जन्मस्थली 'आनंद भवन' भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख केंद्र था और महात्मा गांधी तथा उनके दादा मोतीलाल नेहरू की सरपरस्ती में जवाहर लाल नेहरू एक स्वाधीनता सेनानी की भूमिका निभा रहे थे। इंदिरा जब केवल 19 वर्ष की थी उनकी मां कमला नेहरू का देहांत हो गया था। पुत्री और पिता का यह एकाकी रिश्ता बताता है कि इंदिरा में दायित्व बोध कूट-कूटकर भरा था। आगे चलकर इंदिरा का एक युवा कांग्रेस कार्यकर्ता फिरोज गांधी के साथ विवाह हुआ। फिरोज गांधी तब कमला नेहरू की चिकित्सा सेवा के दौरान स्वीट्जरलैंड में इंदिरा के निकट आए थे और जवाहर लाल नेहरू की इच्छा के विपरीत इन दोनों का विवाह था। यह वह समय था जब यूरोप में दूसरे विश्वयुद्ध को लेकर अफरा-तफरी मची हुई थी और भारत में आजादी का आंदोलन गंभीर मोड़ तो ले रहा था और जवाहर लाल नेहरू बार-बार जेल यात्राएं कर रहे थे। ऐसी विकट परिस्थिति में इंदिरा गांधी ने अपना घर बनाया था और संसार बसाया था। तब शायद किसी ने भी नहीं सोचा था कि कांग्रेस में वानर सेना की यह सदस्य एक दिन भारत के इतिहास में प्रियदर्शिनी और प्रधानमंत्री बनकर उभरेंगी। दरअसल, जवाहर लाल नेहरू ही इंदिरा गांधी के मित्र, मार्गदर्शक और प्रेरणा थे। यह मेरा भी सौभाग्य रहा कि जब नेहरू का 1964 में देहांत हुआ और लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने तो इंदिरा गांधी को उन्होंने सूचना-प्रसारण मंत्री बनाया था और उन्हीं दिनों इंदिरा गांधी ने हमारे आकाशवाणी कलाकार संघ का दिल्ली के नगर निगम सभागार में उद्घाटन किया था। मुझे याद है कि तब अविभाजित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव श्रीपद अमृत डांगे ने हमें संस्कृति, समाज और जनसंचार माध्यमों की भूमिका पर महत्वपूर्ण उद्बोधन किया था। यह आकाशवाणी में मजदूर आंदोलन का प्रारंभ था। इसी के परिणामस्वरूप इंदिरा गांधी ने पहली बार आकाशवाणी के कलाकारों को अनुबंध की बंधुवा मजदूरी से मुक्ति दिलाकर नियमित केंद्रीय कर्मचारी का दर्जा देने का निर्णय सुनाया था। इसके बाद प्रधानमंत्री बनने के बाद भी इंदिरा गांधी से मुझे कई बार मिलने का सुयोग मिला और आज मैं उस स्मृति को याद करते हुए यही कहना चाहता हूं कि वह एक दृढ़ प्रतिज्ञ और दुस्साहसी महिला थी। उनमें मां की ममता और शासक की कठोरता थी। वह नेहरू की तरह भावुक और स्वप्नदर्शी तो नहीं थी लेकिन देश की एकता, अखंडता और गौरव के प्रति अत्यधिक सजग थी। इंदिरा गांधी का ही साहसिक कदम था कि उन्होंने संविधान में पहली बार लोकतांत्रिक समाजवाद की अवधारणा को स्थापित किया और 1969 में देश की 14 बड़ी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया। यह इंदिरा गांधी का ही साहस था कि कांग्रेस में विघटन का जोखिम उठाकर भी समाजवाद विरोधी तत्वों से कोई समझौता नहीं किया और 1970 में लोकसभा के चुनाव करवाकर अपनी लोकप्रियता को स्थापित किया। राजा-महाराजाओं के प्रीवीयर्स और विशेषाधिकार समाप्त करने का निर्णय लिया। यह तब 'गरीबी हटाओ' के नारे का दौर था। इसके साथ ही पूर्वी पाकिस्तान की 'बांग्लादेश 'के रूप में मुक्ति दिलाने के लिए भी इंदिरा गांधी को ही इतिहास याद करता है तो पहली हरित क्रांति के लिए भी उन्हें भुला नहीं पाता है। पोकरण का पहला परमाणु विस्फोट भी इंदिरा गांधी का ही निर्णय था तो 1975 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में उठे संपूर्ण क्रांति के आंदोलन को आपातकाल लागू करके दबाने का अलोकप्रिय फैसला भी उन्हीं का था।

आज हम जब इंदिरा गांधी के 1917 से 1984 के जीवनकाल को देखते हैं तो लगता है कि आपातकाल का लागू करना और पृथकतावादी खालिस्तान के आंदोलन में स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्रवाई करवाना उनका सबसे कठोर और विवादास्पद फैसला था और उसके मुख्य कारण यही थे कि कांग्रेस के विघटन के बाद देश में सामंती और फासिस्टवादी धार्मिक ताकतों को उन्माद बढ़ गया था और देश में अराजकता का जोर ही चला था। इन दो निर्णयों को छोड़कर इंदिरा गांधी के प्रत्येक फैसलों पर आम जनता कभी विभाजित नहीं हुई और एकजुट बनी रही। इंदिरा गांधी का जो भी तर्क रहा हो और परिस्थितियां रही हों लेकिन हमारी राय में यह दो सवाल आज भी उनके प्रधानमंत्री काल की बात का गवाह है कि इंदिरा गांधी भारतीय राजनीति में एक शक्ति और बलिदान का अध्याय रचने वाली महिला है तथा विश्व पटल पर उनकी अमिट छाप आज भी भारत की मान-सम्मान दिलवाने के लिए याद आती है। मुझे इंदिरा गांधी की याद इसलिए भी आती है कि कांग्रेस में वैचारिक ऊर्जा फूंकने का काम सबसे पहले उन्होंने ही किया था और उन पर कभी कोई भ्रष्टाचार और दुराचार के आरोप जनता ने नहीं लगाए थे। राष्ट्र निर्माण की इस प्रक्रिया में इंदिरा गांधी को आज भी आम लोग आदर से देखते हैं और बलिदान की परंपरा ही मानते हैं। कई समीक्षक मानते हैं कि इंदिरा गांधी कठोर थीं लेकिन हमारा ऐसा मानना है कि इंदिरा गांधी में बुनियादी परिवर्तन की ऐसी नायिका थीं जो समता और न्याय के साथ-साथ विकास को समर्पित थीं। भारतीय राजनीति में षडयंत्रों की राजनीति से सबसे अधिक संघर्ष ही उन्होंने ही किया था और पाकिस्तान को उसकी हैसियत उन्होंने ही बताई थी। भारत को विश्व मानचित्र पर एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय आज उन्हीं को जाता है। यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता रही है कि तब अटल बिहारी वाजपेयी भी उन्हें दुर्गा और भवानी कहा करते थे और डॉ. राम मनोहर लोहिया के 'गूंगी गुड़िया' के प्रचार को आम जनता ने नकार दिया था।

हमें आज भी लगता है कि जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी और आगे राहुल गांधी ने पाकिस्तान का धोखा खाया तो राजीव गांधी ने श्रीलंका के लिट्टे के आतंकवाद को अपना जीवन चुकाया। इसी कारण आज भी कांग्रेस के पास केवल कहने-सुनने को गांधी-नेहरू परिवार के त्याग और बलिदान का इतिहास ही है। यह कटु सत्य भी अलग है कि कांग्रेस आज नेहरू, इंदिरा, राजीव और महात्मा गांधी की प्रेरणा पर कम ध्यान दे रही है और समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता के महत्व को भी कम समझ रही है। फिर भी इंदिरा गांधी का 31 अक्टूबर, 1984 का बलिदान हमें एक बार पुनः यही याद दिलाता है कि दुनिया के किसी देश में आज तक ऐसी शक्तिशाली और जन कल्याण को समर्पित एक महिला का इतिहास हमारे बीच अन्यत्र नहीं है और यही कारण है कि भारत जैसे महान लोकतंत्र में नेहरू-गांधी परिवार की इस देश सेवा का ही आज चारों तरफ बोलबाला है।

सरदार पटेल : नये भारत के शिल्पकार और स्वप्नद्रष्टा युगपुरुष

- ललित गर्ग

किसी राष्ट्र का निर्माण केवल स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने से नहीं होता, बल्कि स्वतंत्रता को एकता, अखंडता, सुरक्षा और सामूहिक संकल्प की शक्ति में बदलने से होता है। भारत की स्वतंत्रता के बाद यह सबसे बड़ी चुनौती थी। देश के सामने रियासतों का बिखराव था, विभाजन की पीड़ा थी, सांप्रदायिक तनाव था, सीमाओं पर असुरक्षा थी और नवजात लोकतंत्र के सामने अनेक राजनीतिक एवं प्रशासनिक संकट थे। ऐसे कठिन समय में यदि किसी एक व्यक्तित्व ने भारत को भौगोलिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और राष्ट्रीय दृष्टि से एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक दायित्व निभाया, तो वे थे सरदार वल्लभभाई पटेल। उनकी 151वीं जयंती पर मनाया जाने वाला राष्ट्रीय एकता दिवस केवल एक महापुरुष का स्मरण नहीं, बल्कि भारत की सामूहिक शक्ति, राष्ट्रीय स्वाभिमान और दूरदर्शी नेतृत्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराने का अवसर है। सरदार पटेल का व्यक्तित्व उस चट्टान की तरह था, जिस पर कठिन से कठिन परिस्थितियों की लहरें टकराकर लौट जाती थीं। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी दृढ़ता, संगठन क्षमता और जन नेतृत्व ने उन्हें राष्ट्रीय राजनीति में विशिष्ट स्थान दिलाया था। खेड़ा सत्याग्रह और बारडोली आंदोलन ने उन्हें किसानों के संघर्ष का नायक बनाया। बारडोली की महिलाओं द्वारा दिया गया 'सरदार' संबोधन आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की राष्ट्रीय पहचान बन गया लेकिन उनकी वास्तविक ऐतिहासिक भूमिका स्वतंत्रता के बाद सामने आई, जब भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करना सबसे बड़ी आवश्यकता थी।

उस समय देश में 562 से अधिक रियासतें थीं। अनेक रियासतों के शासक स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने अथवा भारत से अलग रहने की आकांक्षा रखते थे। ऐसी स्थिति में भारत का राजनीतिक मानचित्र खंडित हो सकता था। सरदार पटेल ने अपनी राजनीतिक दृढ़ता, असाधारण कूटनीति और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता से इस चुनौती का समाधान किया। उन्होंने जहां आवश्यकता हुई वहां संवाद का सहारा लिया, जहां जरूरी हुआ वहां दृढ़ता दिखाई और जहां राष्ट्रीय हित सर्वोपरि था वहां किसी दबाव के सामने झुकने से इनकार कर दिया। हैदराबाद का भारत में विलय इसका उल्लेखनीय उदाहरण है। यह केवल रियासतों का विलय नहीं था, बल्कि एक आधुनिक राष्ट्र की आधारशिला रखने वाला ऐतिहासिक अभियान था। पटेल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे राजनीति को सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, राष्ट्र निर्माण का दायित्व मानते थे। उनके लिए राष्ट्रीय हित किसी दल, विचारधारा, क्षेत्र अथवा समुदाय से ऊपर था। वे जानते थे कि स्वतंत्रता की रक्षा केवल भावनात्मक नारों से नहीं हो सकती। इसके लिए मजबूत प्रशासन, अनुशासित शासन, स्पष्ट विदेश नीति और आंतरिक सुरक्षा की ठोस व्यवस्था आवश्यक है। पाकिस्तान की नीतियों, कश्मीर के प्रश्न और सीमावर्ती क्षेत्रों की चुनौतियों को लेकर उनकी चिंताएं इसी राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टि का प्रमाण थीं। चीन की तिब्बत संबंधी नीति को लेकर उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को 7 नवंबर 1950 को लिखे पत्र में जिस प्रकार आगाह किया था, वह उनकी सामरिक दूरदृष्टि का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उन्होंने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में सद्भावना के साथ-साथ सतर्कता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा को भी अनिवार्य माना।

सरदार पटेल की दूरदर्शिता का एक और महत्वपूर्ण पक्ष भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण था। स्वतंत्रता के बाद अनेक लोग अंग्रेजों की बनाई प्रशासनिक सेवाओं को समाप्त करने के पक्ष में थे, लेकिन पटेल ने इनके महत्व को समझा। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा जैसी अखिल भारतीय सेवाओं को मजबूत आधार प्रदान किया। उनका मानना था कि देश की एकता और प्रशासनिक स्थिरता के लिए ऐसी संस्थाएं जरूरी हैं, जो राजनीतिक परिवर्तन के बावजूद राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाती रहें। उन्होंने अधिकारियों में यह विश्वास पैदा किया कि अब उनकी निष्ठा किसी विदेशी शासन के प्रति नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत और उसके नागरिकों के प्रति होनी चाहिए। इसीलिए उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाओं का संरक्षक भी कहा जाता है। उनकी राजनीतिक दृष्टि में दृढ़ता थी, लेकिन वह हठधर्मिता नहीं थी। वे जानते थे कि राष्ट्र केवल कानून और प्रशासन से नहीं, बल्कि सामाजिक विश्वास और नागरिक उत्तरदायित्व से भी मजबूत होता है। वे राष्ट्रीय एकता को विविधताओं के निषेध के रूप में नहीं, बल्कि विविधताओं के बीच साझा राष्ट्रीय चेतना के विकास के रूप में देखते थे। भारत की भाषाएं, संस्कृतियां, परंपराएं और आस्थाएं अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन राष्ट्र के प्रति निष्ठा और संविधान के प्रति सम्मान सबको एक सूत्र में बांधते हैं। आज जब समाज में वैचारिक मतभेद, क्षेत्रीय आग्रह, जातीय विभाजन और राजनीतिक कटुता की प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं, तब पटेल का यह संदेश और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

आज जब भारत वर्ष 2047 तक विकसित, आत्मनिर्भर, समृद्ध और विश्वशक्ति के रूप में स्थापित होने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है, तब सरदार वल्लभभाई पटेल के विचार, दृष्टि और राष्ट्रनिर्माण की भावना पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठती है। उन्होंने जिस अखंड भारत की कल्पना की थी, उसकी मजबूती का आधार केवल भौगोलिक एकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक समरसता, प्रशासनिक दृढ़ता और सामूहिक उत्तरदायित्व था। आज भारत के सामने आर्थिक प्रगति, तकनीकी आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता, आंतरिक सुरक्षा, सुशासन और वैश्विक नेतृत्व की जो चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ हैं, उनके समाधान में पटेल की राष्ट्रनिष्ठा, दृढ़ इच्छाशक्ति और व्यावहारिक नेतृत्व दृष्टि मार्गदर्शक बन सकती है। विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब देश की विविधता उसकी शक्ति बने, राष्ट्रीय हित सर्वोपरि रहे और प्रत्येक नागरिक राष्ट्रनिर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाए। इस दृष्टि से सरदार पटेल केवल इतिहास के महानायक नहीं, बल्कि 2047 के भारत की दिशा और दशा निर्धारित करने वाले प्रेरणास्रोत हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल का व्यक्तित्व अदम्य साहस, लौह इच्छाशक्ति, अनुशासन, स्पष्टवादिता, संगठन क्षमता, प्रशासनिक दक्षता और अटूट राष्ट्रभक्ति का विलक्षण समन्वय था। वे दृढ़ संकल्प के धनी होने के साथ-साथ अत्यंत व्यावहारिक, दूरदर्शी और निर्णय लेने में असाधारण क्षमता रखने वाले राजनेता थे। वे केवल स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी या देश के प्रथम उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री ही नहीं थे, बल्कि ऐसे राष्ट्रशिल्पी थे जिन्होंने भारत की एकता और अखंडता को स्थायी आधार प्रदान किया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि महान राष्ट्रों का निर्माण केवल संकल्पों से नहीं, बल्कि चरित्रबल, अनुशासन, कर्मनिष्ठा, त्याग और सामूहिक प्रतिबद्धता से होता है। यही वे शाश्वत गुण हैं, जिनकी आज के भारत और आने वाली पीढ़ियों को सर्वाधिक आवश्यकता है। आज भारत आर्थिक महाशक्ति बनने, वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है लेकिन विकास की इस यात्रा की सबसे बड़ी शर्त आंतरिक एकता और राष्ट्रीय सुरक्षा है। आर्थिक समृद्धि तभी स्थायी हो सकती है, जब देश सामाजिक रूप से संगठित, राजनीतिक रूप से स्थिर और सामरिक रूप से सुदृढ़ हो। सरदार पटेल का जीवन हमें यही सिखाता है कि राष्ट्र की शक्ति उसके संसाधनों से अधिक उसके संकल्प, नेतृत्व और एकजुट नागरिक चेतना में निहित होती है।

सरदार पटेल का निधन 15 दिसंबर 1950 को हो गया, लेकिन उनका राष्ट्रवादी चिंतन आज भी भारत की राष्ट्रीय चेतना का आधार है। वर्ष 2018 में गुजरात में स्थापित उनकी 182 मीटर ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' उनके विराट व्यक्तित्व और राष्ट्र के प्रति उनके योगदान का प्रतीक है किंतु उनकी वास्तविक स्मृति किसी प्रतिमा की ऊंचाई में नहीं, बल्कि भारत की एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के हमारे सामूहिक प्रयासों में जीवित रहेगी। सरदार पटेल केवल रियासतों को जोड़ने वाले शिल्पकार नहीं थे, वे बिखरी हुई राष्ट्रीय चेतना को एक संकल्प में बदलने वाले युगपुरुष थे। उनकी जयंती पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि भारत की एकता को केवल इतिहास की उपलब्धि नहीं, वर्तमान का उत्तरदायित्व और भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बनाएंगे। यही लौहपुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी और यही राष्ट्रीय एकता दिवस का वास्तविक उद्देश्य भी।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 नवंबर 2026

सम्पादकीय

डिजिटल चोरीः एक नया अपराध

सुविधाओं के रास्ते में अपराध के नित नए कारनामे होते हैं ऐसा आए दिन दिखाई देने लगा है। आज डिजिटल का युग है। यह बहुत बड़ी खोज है और दुनिया के अनेक काम इसी भरोसे हैं। अनेक प्रकार की सेवाएं डिजिटल हैं, सुविधाएं डिजिटल हैं और व्यापार से लेकर सरकारी, गैर सरकारी कामकाज तक डिजिटल हैं। अपराधियों के अपराध भी डिजिटल पर होने लगे हैं। न्यूयार्क से खबर है डिजिटल चोरी की। सबसे बड़ी चोरी सामने आई है। हैकर्स ने 20 मिनट में साठ हजार करोड़ के क्रिप्टो उड़ा दिए। संसारभर में यह एक बड़ी वारदात मानी जा रही है। प्लेटफार्म बिनांस में वारदात हुई है और उत्तर कोरिया के हैकर्स पर संदेह किया जा रहा है।

खबर के अनुसार क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंज (बिनांस) में ब्लॉकचैन सिक्योरिटी में सेंध लगाकर हैकर्स कई वालेट से चोरी की है। वालेट से 6.36 बिलियन अमेरिकी डॉलर की करेंसी उड़ाई है जो करीब 60 हजार करोड़ रुपए होती है। यह अपराध बड़े जोखिम की हद पर जाकर किया गया है और विडंबना यह है कि आने वाले समय में ऐसी गतिविधियों पर नज़र रखना अनिवार्य हो गया है। इस अपराध का खुलासा होते ही बिनांस और क्रिप्टो करेंसी कंपनियों के अधिकारियों ने कई तात्कालिक उपाय सुनिश्चित किए हैं और चोरी गई राशि का कुछ भाग लौटने में सफलता पाई है। अपराधियों को लेकर जो अनुमान सामने आए हैं उनमें शक की सुई उत्तर कोरिया पर है, जहां ऐसे अपराध पनप रहे हैं। अपराधी राष्ट्रों की एक सूची मिल रही जो नैतिकता को ताक में रखकर ऐसे स्वार्थ से भरे काम कर रहे हैं और नए अपराधों को जन्म दे रहे हैं। हमें पूर्व उपाय सुनिश्चित करने चाहिए और ऐसे अपराधियों के नाक में नकेल का प्रयास करना चाहिए।

सिनर्जी 2के26 : फ्रेशर्स पार्टी, विदाई समारोह एवं एलुमनाई मीट का भव्य आयोजन

उदयपुर (ह. सं.)। वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी, साईं तिरुपति विश्वविद्यालय द्वारा हिरण मगरी, सेक्टर-4 स्थित अटल सभागार में सिनर्जी 2च26 के अंतर्गत फ्रेशर्स पार्टी, विदाई समारोह एवं एलुमनाई मीट का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम नवागंतुक विद्यार्थियों के स्वागत, अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को भावभीनी विदाई देने तथा पूर्व विद्यार्थियों के साथ संबंधों को सुदृढ़ बनाने का एक यादगार अवसर बना।



कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ खेमचंद गुप्ता ने की। दीप प्रज्वलन, जीवंत प्रदर्शन, संवादात्मक गतिविधियाँ और फ्रेशर्स बैच 2025-26 के रैंप वॉक के साथ इस कार्यक्रम की शुरुआत गर्मजोशी से हुई, जबकि सीनियर्स बैच 2022-23 को भावपूर्ण भाषणों और यादगार प्रस्तुतियों के साथ विदाई दी गई। इस मौके पर साईं तिरूपति यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत नाहर, उप कुलसचिव डॉ. कनुप्रिया तिवारी, डीन पीजी डॉ. भरत पराशर, नर्सिंग के प्रिंसिपल डॉ. विजय सिंह रावत, फिजियोथेरेपी के प्रिंसिपल डॉ. मोहम्मद यूनुस, आयुर्वेद के प्रिंसिपल डॉ. वी. के. मित्तल और परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुमित माथुर ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। रैंप वॉक में द्वितीय सेमेस्टर से आशीष कटारा और माही सोलंकी को मिस्टर और मिस फ्रेशर घोषित किया गया। साथ ही, रनर-अप चंदन सिंह पुरोहित और आकांक्षा लबाना रहे। कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक डॉ. निपुण दशोरा और डॉ. पाखुरी मेहता तथा सहायक समन्वयक डॉ. आयुष गर्ग और श्रीमती ज्योति मेनारिया थे व कार्यक्रम का समापन डॉ. पाखुरी मेहता ने किया।

विश्वव्यापी दीपोत्सव

- डॉ. श्याम मनोहर व्यास

दीपोत्सव किसी ने किसी रूप में सारे विश्व में अलग-अलग नाम व रूपों में मनाया जा रहा है। ईसा से पांचवीं शताब्दी पूर्व मिश्र व यूनान के मंदिरों में मिट्टी व धातु के दीपकों को प्रज्वलित किया जाता था। यूनान के प्रसिद्ध कवि होमर ने अपने महाकाव्य 'ओडिसी' व 'इलियट' में स्थान-स्थान पर दीपोत्सव का वर्णन किया है। कवि हेरी डॉटस ने अपने ग्रंथ में मिस्र के लचनों की अर्थात दीपोत्सव मनाने का वर्णन किया है। मेसोपोटामिया सभ्यता के प्राचीन अवशेषों में प्राचीन काल के मिट्टी के दीपक प्राप्त हुए हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें झीलों के किनारे रहने वाले लोग उपयोग में लेते थे। यूनान में धन की देवी डायना की पूजा यूनानवासी प्राचीन काल में करते थे। जनवरी के प्रथम सप्ताह में दीपोत्सव के साथ धन की देवी की आराधना की जाती थी।

यूनान में पहले मामबत्तियां पशुओं की चर्बी से बनाई जाती थी परंतु 12वीं शताब्दी में मामबत्तियां मॉम से बनाई जाने लगी। यहूदी हनोका नामक एक त्यौहार मनाते हैं जो शरद ऋतु में 21, 22 दिसंबर को होता है इस अवसर पर दीपक जलाए जाते हैं। प्राचीन काल में ईरान में फारसी लोग अग्नि पूजक होने से दीपोत्सव मानते थे। जापान में बुद्ध धर्म के प्रचार के साथ ही दीपोत्सव मनाने की परिपाटी चली आ रही है। वहां श्राद्ध व दीपावली साथ-साथ मनाए जाते हैं। लंका में इस अवसर पर हाथियों को सजाकर जुलूस निकाला जाता है। चीन में वर्षा ऋतु के पश्चात 10 दिन तक कागज के नियम बनाकर दीपक उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश व नेपाल में भी हिंदू लोग इसे धूमधाम से मनाते हैं। जावा, सुमात्रा, बाली, कंबोडिया, थाईलैंड आदि एशिया के पूर्वी देशों में इसे मनाया जाता है। वहां के स्वर्ण भूषणों पर 'श्री' अंकित किया जाता है। मलाया के निवासी कोकालीसी देवी की उपासना समृद्धि प्राप्ति के लिए करते थे। तिब्बत व कोरिया में चांदी की थाली में दीपक सजाकर पौधों की देवी तारा की आराधना की जाती है। इस प्रकार दीपोत्सव का पर्व विश्व व्यापी है जिसे पूरे विश्व में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

दीपावली : अंधकार से प्रकाश की ओर

- सुरभिश्री डागर

दीप जले मन-आँगना,
मिटे तमस का भार।
प्रेम-प्रकाशित हो हृदय,
जगमग हो संसार॥

दीपावली भारतीय संस्कृति का वह अनुपम पर्व है, जो केवल घर-आँगन को दीपों से रोशन करने का उत्सव नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर सोए हुए प्रकाश को जगाने का संदेश भी देता है। कार्तिक अमावस्या की अँधेरी रात असंख्य दीपों की ज्योति से जगमगा उठती है। ऐसा लगता है मानो धरती ने तारों की चादर ओढ़ ली हो और आकाश अपनी समस्त आभा धरती पर उतार लाया हो।



दीपावली का संबंध भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटने से जोड़ा जाता है। श्रीराम के आगमन की प्रसन्नता में अयोध्यावासियों ने घी के दीप जलाकर नगर को प्रकाश से भर दिया था। यह प्रकाश केवल उत्सव का प्रकाश नहीं था, बल्कि सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और मर्यादा की अहंकार पर विजय का प्रतीक था।

तिमिर कितना भी घना रहे,
दीप न माने हार।
छोटी-सी इक ज्योति भी,
करती तम पर वार॥

दीपावली से अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ जुड़ी हुई हैं। इस दिन घरों की सफाई की जाती है, रंगोली सजाई जाती है और संध्या समय दीप प्रज्वलित किए जाते हैं। अनेक परिवार लक्ष्मी-गणेश का पूजन करते हैं। मान्यता है कि स्वच्छ, सुंदर और सकारात्मक वातावरण में समृद्धि का स्वागत किया जाता है। इसलिए दीपावली बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ अंतर्मन की स्वच्छता का भी पर्व है। हमारे घरों में मिट्टी के दीपक इस पर्व की आत्मा हैं। एक छोटा-सा दीपक अपने भीतर तेल और बाती समेटकर स्वयं जलता है और दूसरों को प्रकाश देता है। उसका मौन संदेश है कि जीवन की सार्थकता केवल स्वयं प्रकाशित होने में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में भी उजाला बाँटने में है।

आज दीपावली आधुनिकता के रंगों से भी सजी है। बाजारों में आकर्षक सजावट, रंग-बिरंगी रोशनियाँ और उपहारों की भरमार दिखाई देती है। किंतु उत्सव का वास्तविक सौंदर्य तभी है, जब इसमें प्रेम, अपनापन और संवेदना भी शामिल हों। दीपावली पर हमें उन लोगों को भी याद करना चाहिए जिनके जीवन में अभाव का अँधेरा है। किसी जरूरतमंद के घर भोजन पहुँचाना, किसी बच्चे के चेहरे पर मुस्कान लाना अथवा किसी अकेले व्यक्ति के साथ कुछ समय बिताना ये भी दीपावली के दीप ही हैं।

एक दीप तुम प्रेम का,
मन में आज जलाओ।
जिसके जीवन तम भरा,
उसके द्वार जलाओ॥

दीपावली हमें पर्यावरण के प्रति भी सजग होने का संदेश देती है। पटाखों के अत्यधिक प्रयोग से वायु और ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है तथा बच्चों, बुजुर्गों और पशु-पक्षियों को परेशानी हो सकती है। इसलिए दीपों की गरिमा बनाए रखते हुए संयमित और

दीप जले मन-आँगना,
मिटे तमस का भार।
प्रेम-प्रकाशित हो हृदय,
जगमग हो संसार॥

दीपावली : बाहर के दीयों से भीतर के दीये तक की यात्रा

- डॉ. संघमित्रा चक्रवर्ती

दीपावली पर हम सब बाहर दीये जलाते हैं। घर को रोशन करते हैं, रंगोली बनाते हैं, लक्ष्मी-गणेश की पूजा करते हैं। पर हमारे शास्त्रों ने दीपावली को कभी बाहर का त्योहार नहीं कहा। वेद कहते हैं - 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' - अंधकार से प्रकाश की ओर चलो। वह प्रकाश बाहर नहीं, भीतर है। दीपावली बाहर के अंधेरे को दूर करने का नहीं, भीतर के अंधेरे को पहचानने का त्योहार है।



वेदांत के दृष्टि में दीपावली के दीये में तीन चीजें होती हैं-

'मिट्टी का दीया'- हमारा शरीर। हमारा यह शरीर नश्वर है, मिट्टी से बना है, मिट्टी में मिल जाएगा।

'तेल / घी'- हमारे संस्कार और कर्म। जैसे तेल दीये को जलाता है, वैसे ही हमारे कर्म हमारे जीवन को चलाते हैं।

'बाती'- हमारा अहंकार (मैं)। जब तक बाती है, तब तक दीया जलता है। पर बाती जल-जलकर ही प्रकाश देती है।

'प्रकाश'- वह है हमारी आत्मा। वह चेतना, वह अंतर्ज्योति।

हम सब बाहर दीया जलाते हैं, पर भूल जाते हैं कि असली प्रकाश तो भीतर जल रहा है। बिना भीतर के प्रकाश के, बाहर का कोई प्रकाश काम नहीं करता। आँखें तभी देखती हैं जब भीतर देखने की चेतना हो। इसीलिए दीपावली पर लक्ष्मीजी के साथ दीये की पूजा होती है क्योंकि दीया साक्षी चेतना का प्रतीक है।

श्रीराम का अयोध्या आगमन-एक आध्यात्मिक कथा -

हम सब जानते हैं कि राम 14 वर्ष वनवास के बाद अयोध्या लौटे, इसलिए दीये जले पर इसका आध्यात्मिक अर्थ क्या है?

राम - हमारी आत्मा, अंतर्ज्योति।

सीता - हमारी बुद्धि, जो पवित्र है।

रावण - हमारा अहंकार और वासनाएँ, जो सीता (बुद्धि) का हरण कर लेती हैं।

14 वर्ष का वनवास - इंद्रियों के वन में भटकना। हम भी तो रोज मन के जंगल में भटकते हैं।

हनुमान- हमारा प्राण और निष्ठा, जो आत्मा को बुद्धि से फिर मिलाता है।

और श्री राम का अयोध्या लौटना- आत्मा का अपने मूल स्थान, हृदय में लौटना। जब राम (आत्मा) अयोध्या (हृदय) लौटते हैं, तब हर घर में दीया जलता है। इसका अर्थ है - जब हमारा मन बाहर से हटकर भीतर लौटता है, तभी 'सच्ची दीपावली' होती है। इसलिए दीपावली अमावस्या की रात को होती है- सबसे घने अंधेरे की रात। ताकि हम समझें- बाहर कितना भी अंधेरा हो, भीतर का दीया कभी बुझता नहीं।

लक्ष्मी पूजा और अंतर्ज्योति का संबंध :

हम दीपावली पर लक्ष्मीजी से धन माँगते हैं पर आदि लक्ष्मी कौन हैं?

शास्त्र में आठ लक्ष्मी हैं- आदि लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, विद्या लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी... और सबसे पहली हैं - आदि लक्ष्मी - जो आत्म-ज्ञान है। बिना आदि लक्ष्मी (भीतर के प्रकाश) के, धन लक्ष्मी (बाहर के धन) का कोई मूल्य नहीं। जिसके भीतर अंधेरा है, उसके पास करोड़ों रुपये भी हों तो वह गरीब ही है। वह डर, लालच और ईर्ष्या में जीता है।

इसीलिए लक्ष्मी पूजा में हम दीया जलाकर प्रार्थना करते हैं - 'माँ, पहले मेरे भीतर का अंधेरा दूर करो-अज्ञान, क्रोध, द्वेष, मोह का अंधेरा। फिर बाहर का अंधेरा तो स्वयं दूर हो जाएगा।'

गीता में श्रीकृष्ण इसी को कहते हैं -'ज्योतिषामपि तज्ज्योति: तमस: परमुच्यते'- वह परमात्मा सभी ज्योतियों की ज्योति है, अंधकार से परे है।

हमारे शास्त्रों के अनुसार भीतर का दीया जलाने के तीन प्रमुख साधन का उल्लेख इस प्रकार हैं। यह साधना से प्रकट होता है। ऋषियों ने तीन सरल उपाय बताए हैं-

(क) 'विवेक'- अंधेरा और प्रकाश में फर्क जानना, कौन सी बात मुझे शांति देती है और कौन सी अशांति? यही विवेक है।

(ख) 'वैराग्य'- फालतू चीजों को छोड़ना- दीया तभी तेज जलता है जब तेल साफ हो। यदि तेल में पानी मिला हो तो दीया बुझ जाएगा। वैसे ही यदि मन में ईर्ष्या, शिकायत, और तुलना का पानी मिला हो तो अंतर्ज्योति तेज नहीं जलेगी। दीपावली पर हम घर की सफाई करते हैं, वैसे ही मन की भी सफाई जरूरी है- क्षमा करके, छोड़कर।

(ग) 'ध्यान'- बाती को स्थिर करना- हवा में दीया टिमटिमाता है, वैसे ही चंचल मन में आत्मा का प्रकाश टिमटिमाता है। शांत मन से आँख बंद करके सिर्फ अपनी साँस को देखना, या 'राम' नाम को सुनना-इससे मन की हवा शांत होती है और भीतर का प्रकाश स्थिर होता है। यही सच्ची दीपावली है।

एक दीया अपने भीतर भी जलाओ :

इस दीपावली पर आप सौ दीये बाहर जलाइए, बहुत सुंदर बात है। पर एक दीया अपने भीतर भी जलाइए।

जब सब सो जाएँ, पृथ्वी शांत प्रतीत हो, पटाखों की आवाज शांत हो जाए, तब थोड़ी देर अकेले बैठिए। आँखें बंद कीजिए और देखिए वहाँ भी एक प्रकाश है जो बिना तेल, बिना बाती के जल रहा है। वह बचपन से जल रहा है। वही आप हैं। बाहर के दीये एक रात में बुझ जाएँगे। पर यदि भीतर का दीया एक बार जल गया, तो वह कभी नहीं बुझता।

तभी तो संत कबीर ने कहा था-
'बाहर दीया तो सब जले,
भीतर जले न कोय।
भीतर जो दीया जले,
तो बाहर का तम खोय।'

पुष्टिमार्ग की प्रधान पीठ नाथद्वारा में अन्नकूट परम्परा

– डॉ. कुलशेखर व्यास

गोवर्धन धराधार गोकुल त्राणकारक।
विष्णुबाहु कृतोच्छाय गवां कोटिप्रभो भव।।

भारतवर्ष विविधताओं का देश है। यहाँ पर विभिन्न धर्म और सम्प्रदायों को समान रूप से अधिकार प्राप्त हैं। उसी के अन्तर्गत पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय का स्थान महत्वपूर्ण है। पुष्टिमार्ग की प्रधान पीठ राजस्थान के राजसमन्द जिले की नाथद्वारा विधानसभा क्षेत्र में स्थित है, जिसे श्रीनाथजी के नाम से जाना जाता है। इस पीठ पर पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार वर्षभर में विभिन्न पर्व, उत्सव एवं त्योहारों का आयोजन किया जाता है। उसी में पाँच दिवसीय दीपावली पर्व के चतुर्थ दिवस पर अन्नकूट महोत्सव धूमधाम और परम्परागत तरीके से मनाया जाता है। यह महोत्सव कुछ अलग है और परम्पराएँ काफी समृद्ध हैं। यह एक सांस्कृतिक धरोहर समेटे हुए है।

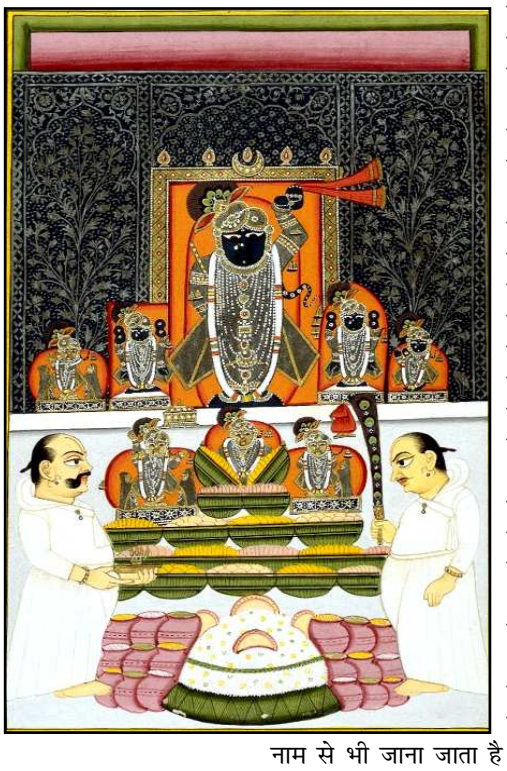

यह महोत्सव दीपावली के दूसरे दिन यानी कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा तिथि को मनाया जाता है। श्रीनाथजी में यह महोत्सव लगभग 350 वर्षों से मानाया जा रहा है। महोत्सव का सम्बन्ध भगवान कृष्ण द्वारा इन्द्र के घमण्ड को चूर करने से सम्बन्धित है। पौराणिक मान्यताओं एवं कथा, कथनों के अनुसार भगवान कृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा अंगुली पर धारण किया था और सभी बृजवासियों को उनकी शरण में ले लिया था, उसी दिन से इस परम्परा का प्रारम्भ हुआ था; क्योंकि इस परम्परा से पूर्व इस दिन वर्षा के देवता भगवान इन्द्र की पूजा की जाती थी।

जब इन्द्र को यह ज्ञात हुआ कि बृजवासी गोवर्धन पर्वत की पूजा करने लगे हैं तो उनको क्रोध आया और उन्होंने भयंकर वर्षा का प्रकोप किया और सम्पूर्ण बृज में त्राहिमाम मच गया। तब भगवान श्रीकृष्ण ने अपने दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली पर गोवर्धन पर्वत को उठा लिया और सभी बृजवासियों को पर्वत के नीचे बुला कर इन्द्र के प्रकोप से उनकी रक्षा की। तब इन्द्र ने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा को स्वीकारा और मेघों को वापस बुला लिया। स्वयं इन्द्र ने भगवान श्रीकृष्ण से क्षमा याचना कर अपनी गलती पर पश्चाताप प्रकट किया। अन्त में श्रीकृष्ण ने सातवें दिन गोवर्धन पर्वत को नीचे रखा और गोवर्धन की महिमा का वर्णन किया। इसी घटना के पुण्य स्मरण में गोवर्धन पर्वत की पूजा की जाती है।



अन्नकूट शब्द दो शब्दों की संधि से बना है। अन्न का अर्थ धान्य एवं खाद्य पदार्थ से है, वहीं कूट का अर्थ पहाड़ के शिखर से है। इसीलिए इस दिन गोवर्धन पर्वत जैसा भात (पके हुए चावल) का शिखर बनाया जाता है। विविध प्रकार के व्यंजन बनाकर भगवान को भोग लगाया जाता है, जिसे अन्नकूट कहाँ जाता है। ऐसा आयोजन लगभग सभी विष्णु मन्दिरों में होता है।

अन्नकूट में उपयोग की गई समग्री को सकड़ी सामग्री (पानी के मिश्रण से बनने वाली सामग्री) कहा जाता है, जिसका निर्माण कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में पुष्य नक्षत्र के शुभ योग बनने पर प्रारम्भ किया जाता है, जो सप्तमी या अष्टमी को आता है। अत: अन्नकूट की सेवा सप्तमी या अष्टमी तिथि को भट्टी पूजन से प्रारम्भ हो जाती है, जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक चलती है। इस सकड़ी सामग्री में लगभग 60-70 प्रकार की विभिन्न कच्ची खाद्य सामग्री कृष्ण भण्डार से प्राप्त होती है, जिसको पकाकर विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं। साथ ही कृष्ण भण्डार से लगभग 40 मण कच्चे चावल पधराए जाते हैं। कई श्रद्धालु भी कच्चे चावल पधराते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग 50 मण कच्चे चावल का उपयोग होता है। इन कच्चे चावल को पकाया जाता है, जब चावल पक जाते हैं तो उन्हें भात कहा जाता है और इस प्रक्रिया को भात सेवा के नाम से जाना जाता है।

अन्नकूट सामग्री की निर्माण प्रक्रिया को अन्नकूट सेवा कहा जाता है, जिसे सकड़ी या सकरी की सेवा के नाम से भी जाना जाता है। इस सकड़ी की सेवा को करने की योग्यता उन्हीं को दी जाती है, जो पंच द्रविड़ ब्राह्मण हो, यज्ञोपवीतधारी हो और जिसने वल्लभ सम्प्रदाय से ब्रह्म सम्बन्ध ले रखा हो। इन पंच द्रविड़ ब्राह्मणों में भट्टमेवाड़ा, औदिच्य, सांचीहर, नागर, गिरनारा समाज के लोग आते हैं। इन सभी समाज के लोगों में सकड़ी की सेवा करने का बड़ा उत्साह होता है और वह पूर्ण आस्था, विश्वास, समर्पण और श्रद्धाभाव से अन्नकूट की सेवा करते हैं। ये अपने आप को धन्य मानते हैं कि श्रीनाथजी ने उन्हें इस सेवा का अवसर प्रदान किया। इस सेवा के प्रति इतनी श्रद्धा है कि व्यक्ति अपने जीविकोपार्जन के लिए कहीं अन्यत्र स्थान पर होते हुए भी यहाँ सेवा करने के लिए आ जाते हैं। इस सेवा के लिए बाहर से आए हुए सभी सेवाधारियों के लिए मन्दिर मण्डल की ओर से छोटी धर्मशाला में रहने की व्यवस्था की जाती है और उन्हें मन्दिर मण्डल की ओर से सीधा (कच्ची खाद्य समग्री) दी जाती है, जिससे ये सभी सेवाधारी पूर्ण रूप से समर्पित भाव से नाथद्वारा में ही रह कर सेवा कर सकें। इस सेवा के योग्य जो समाज हैं उनका अपना एक मुखिया होता है, जो अपने समाज का प्रतिनिधित्व करता है और उसके निर्देशन में ही सभी प्रकार के कार्य सम्पन्न होते हैं।

इन्हीं समाजों में से भट्टमेवाड़ा समाज के वर्तमान मुखिया वैद्य राजीव भट्ट से चर्चा में ज्ञात हुआ कि भट्टमेवाड़ा समाज श्रीनाथजी की अन्नकूट सेवा लगभग 250 वर्षों से नियमित करता आ रहा है।

वैद्य राजीव भट्ट के अनुसार समाज के मुखिया को श्रीनाथजी के श्री कृष्ण भण्डार से भट्टी पूजन पूर्व एक पत्र प्राप्त होता है, जिसमें उल्लेख किया जाता है कि अमुक तिथि को भट्टी पूजन होगा, जिसमें आप सदैव की भाँति अपने समाज के सेवाधारियों को लेकर अन्नकूट की सेवा में पधारें। भट्ट ने अपने रिकार्ड में से अपने प्रप्रपितामह को नाथद्वारा के कृष्ण भण्डार से भेजा गया सम्वत् 1820 का पत्र दिखाया। इसमें उनके नाम का उल्लेख किया गया है। साथ ही स्वयं भट्ट को 2024 में दिया पत्र भी दर्शाया गया है। यह सेवा नियमित रूप से चली आ रही है। समय समय पर समाज के मुखिया में परिवर्तन होता रहा। वर्तमान में वैद्य राजीव भट्ट अपने परिवार को प्राप्त मुखिया के पद का वंशानुगत परम्परा में निर्वहन कर रहे हैं।

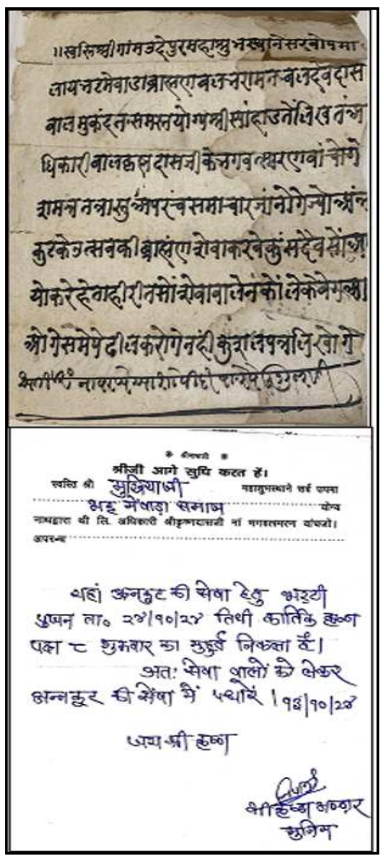

समाज के मुखिया के ज्येष्ठ पुत्र छोटे मुखिया गौरव भट्ट के अनुसार वर्तमान में इस सेवा में सर्वाधिक संख्या के रूप में भट्टमेवाड़ा समाज के सेवाधारी ही होते हैं, जो अपने समाज को दी गई सेवाओं में पहले दिन भट्टी पूजन के बाद से दस दिन तक क्रमश: उड़द के वड़े, मूंग के वड़े, भजिये, पान के भजिये, सेव, पापड़, ग्वार फली की सेवा की जाती है।

इसके बाद कन्द की सेवा प्रारम्भ होती है, जो तीन दिन चलती। इसमें सूरण, रतालू, आलू, शकरकन्द होते हैं। इसके बाद रूपचतुर्दशी को भाजीजी की सेवा होती है। उसके बाद दीपावली को भातजी की सेवा की जाती है। भातजी की सेवा के अगले दिन भगवान श्रीनाथजी के समक्ष 'डोल तिबारी' में भातजी को शिखर रूप में पधराया जाता है और रतन चौक में अन्य निर्मित सामग्री को पधराया जाता है।

यह सामग्री पधराने के बाद तिलकायतजी 'मणिकोठे' से खाजे के रूप में विष्णु भगवान के चारों हाथ के स्थित आयुध शंख, चक्र, पद्म और गदा के साथ विशाल और सुन्दर तुलसी दल की माला, घी का कटोरा, मक्खन का कटोरा, नमक का कटोरा और एक कटोरे में नीम्बू, अदरक, अचार, इत्यादि वस्तुएँ सेवाधारियों को प्रदान करते हैं। उन सभी वस्तुओं से सेवाधारी भातजी के शिखर पर शृंगार करते हैं और 'पुरुष सूक्त' का पाठ करते रहते हैं।

यह कार्य पूर्ण हो जाने के बाद जयकारे लगाते हुए 'रतन चौक' में होते हुए 'लालन का बगीचा' में प्रवेश करते हैं। यहाँ कुछ देर विश्राम के पश्चात् अन्नकूट के मुखिया और अन्य व्यक्ति पधारते हैं और सभी सेवाधारियों को धन्यवाद देते हुए कहते हैं कि सेवा के दौरान किसी को कुछ कह दिया हो तो उसे क्षमा करना और कमियाँ यहीं छोड़ जाना अच्छाइयाँ अपने साथ ले जाना।

इसके बाद तिलकायतजी के साथ सभी सेवाधारी के साथ मन्दिर की परिक्रमा करते हैं और पुन: गौवर्धन चौक में आकर दंडवत प्रणाम करते हैं। वहीं सभी सेवाधारी भी दंडवत प्रणाम करते हुए गोबर से निर्मित गोवर्धन के कुछ अंश को अपने साथ लेकर जाते हैं और अपने घर पर सुरक्षित स्थान पर रखते हैं। ऐसी मान्यता है कि इसको रखने से सभी प्रकार की समृद्धि रहती है।

प्रतिपदा को सायंकाल अन्नकूट के दर्शन लगभग 9 बजे होते हैं। इससे पूर्व मन्दिर मण्डल की ओर से भील समाज को आमन्त्रित किया जाता है, जो अन्नकूट के दर्शन के बाद श्रीनाथजी के समक्ष लगे अन्नकूट के भोग को लूटते हैं, जिसमें मुख्यरूप से भातजी और भाजीजी होते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य सामग्री की भी लूट की जाती है। भील लोग ये लूटी हुई सामग्री को लेकर अपने घर की ओर प्रस्थान करते हैं और रास्ते में जो वैष्णव जन उनसे कुछ मागते हैं तो उसे भी प्रसाद देते हुए घर पहुँचते हैं और लूटी हुई सामग्री को वर्षभर सहेज कर रखते हैं। इसका उपयोग औषधि के रूप में होता है।

इसके पश्चात भाई दूज को सभी सेवाधारियों को कृष्ण भण्डार से बड़े ही सम्मान पूर्वक विदाई दी जाती है, जिसमें श्रीनाथजी का प्रसाद, वस्त्र, तुलसीजी की कंठी, इत्यादि होते हैं। इसके बाद सेवाधारी श्रीनाथजी के दर्शन कर अपनी अपनी सुविधानुसार गन्तव्य स्थान की ओर प्रस्थान कर जाते हैं।

वहीं रियासत काल में भट्टमेवाड़ा समाज के सेवाधारियों को तत्कालीन महाराणा की ओर से श्रीनाथजी के अन्नकूट की सेवा में जाने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था की जाती थी, जिसमें सेवाधारियों के धर परिवार की महिलाएँ, बच्चे एवं बुजुर्ग बैठते थे और युवा वर्ग पैदल यात्रा करते हुए देलवाड़ा पहुँचते थे। देलवाड़ा में थोड़ा विश्राम किया जाता था।

उस समय वहाँ महाराणा की ओर से जलपान की व्यवस्था की जाती थी। इसके कुछ समय पश्चात यात्रा आगे बढ़ती और दूसरा पड़ाव श्री एकलिंगजी में होता था। वहाँ महाराणा की ओर से गोठ की व्यवस्था होती थी, जिसमें समाज के सभी जनों को भोजन कराया जाता था। यदि रात्रि हो जाती तो पड़ाव यही हो जाता था और अगले दिन प्रात: प्रस्थान कर नाथद्वारा पहुँचा जाता था। वहाँ पहुँचने के बाद दिल्ली वाली धर्मशाला में व्यवस्था की जाती थी और सभी सेवाधारी अपने अपने निर्धारित कक्ष में चले जाते थे। कुछ समय पश्चात सेवाधारी एक समूह में एकत्रित होकर वार्तालाप करते वहीं सेवाधारियों के परिवार की महिलाएँ एक समूह में ठाकुरजी के भजन और गरबियों का गायन करती थी।

ऐसी मान्यता है कि बम्बई एक वैष्णव भक्त सेठ ने विशेष रूप से अन्नकूट की सेवा में बाहर से परिवार सहित पधारने वाले सेवाधारियों के आवास की व्यवस्था हेतु इस दिल्ली वाली धर्मशाला का निर्माण करवाया था, परन्तु वर्तमान में सेवाधरियों के लिए छोटी धर्मशाला में ही आवास की व्यवस्था की जाती है।

अहं कृष्णांश: कृष्ण देवस्य अंश।
अहं कृष्णदास: अहं कृष्णदास:।।

सागर कुमारी मीणा को पीएच.डी. की उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से सागर कुमारी मीणा ने अर्थशास्त्र विषय में शोध कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर पीएच.डी. (डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी) की प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त की है।



उनके शोध का शीर्षक 'भारत मैं दूरसंचार उद्योग का आर्थिक विश्लेषण: राजस्थान के उदयपुर शहर के विशेष संदर्भ में' शोध के अंतर्गत भारतीय दूरसंचार उद्योग के आर्थिक विकास, दूरसंचार सेवाओं के विस्तार, उपभोक्ता कल्याण, सेवा गुणवत्ता एवं दूरसंचार क्षेत्र के आर्थिक योगदान का विस्तृत विश्लेषण किया गया। उन्होंने अपना शोध कार्य सुविवि अर्थशास्त्र विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. दीपा सोनी के कुशल मार्गदर्शन एवं निर्देशन में पूर्ण किया।

समाचार / विचार

निरस्त्रीकरण का संदेश देने वाला प्रथम ग्रंथ है आचारांग : डॉ. धींग

पंजाब (ह. सं.)। बहुश्रुत जयमुनि ने कहा कि भारत की प्रादेशिक भाषाएँ प्राकृत की उत्तरवर्ती भाषाएँ हैं। मूनक (पंजाब) में 16-18 अक्टूबर को आयोजित पंचम त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि पंजाबी भाषा में बड़ी संख्या में प्राकृत के शब्द मिलते हैं। उन्होंने प्राकृत भाषा के 1570 शब्द, पंजाबी भाषा में खोजे हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित पंजाब सरकार में केबिनेट मंत्री बिरेंदर गोयल ने कहा कि पंजाब के अनेक पिछड़े क्षेत्रों में जैन समाज ने चिकित्सा शिक्षा के अनेक संस्थान शुरू करके उन क्षेत्रों को पिछड़ेपन से मुक्त कर दिया दिया है। जैन समाज का यह एहसान कभी नहीं भुलाया जा सकता।



जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के सहयोग से श्रुत रत्नाकर, अहमदाबाद द्वारा आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुतस्कन्ध) पर आयोजित संगोष्ठी में संयोजक डॉ. जितेंद्र बी. शाह ने कहा कि प्राकृत संगोष्ठी का एक उद्देश्य आगमों का समय निर्धारण, शब्द व अर्थ का संरक्षण तथा ज्ञान का संक्रमण करना है। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि आचारांग सूत्र निशस्त्रीकरण का संदेश देने वाला दुनिया का प्रथम ग्रंथ है। आचारांग ही विश्व का पहला ग्रंथ है, जिसमें वनस्पति आदि पाँच स्थावरकाय की सजीवता का प्रतिपादन किया गया है। डॉ. धींग ने पशु पक्षियों और वन्य जीवों के अंगों के व्यापार पर चिंता व्यक्त की और हिंसक उत्पादों का उपयोग नहीं करने की सलाह दी। डॉ. धींग ने कहा कि जैन धर्म ज्ञान के साथ आचरण पर भी विशेष जोर देता है, आचारांग सूत्र इसका प्रथम आधार है। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के प्रधान जिनेन्द्र जैन, वीरभ्राता रविंद्र जैन एवं दिनेश कुमार जैन (सीएस) ने अतिथियों का सम्मान किया। संगोष्ठी में डॉ. दीनानाथ शर्मा, प्रो. विजयकुमार जैन, आयकर उपायुक्त कमल जैन, सीए विनय जैन, अभिषेक जैन, रेणु जैन, शोभना शाह, पुष्कर सोलंकी, मोहित जैन सहित अनेक विद्वानों ने भाग लिया। प्रो. एम. चंद्रशेखर ने संचालन किया।

भीम पेमेंट्स ऐप ने 'मीठी दिवाली' अभियान के लिए गूंज के साथ साझेदारी की

उदयपुर (ह. सं.)। भीम पेमेंट्स ऐप, जिसे एनपीसीआई भीम ने विकसित किया ने 'मीठी दिवाली' अभियान के तीसरे संस्करण की शुरूआत की है। यह अभियान 8 नवंबर तक चलेगा जिसके तहत ऐप पर किसी उपयोगकर्ता द्वारा किए गए हर 7वें लेनदेन पर, भीम पेमेंट्स ऐप उन बच्चों को स्कूल किट उपलब्ध कराने में सहयोग करेगा, जिन्हें पढ़ाई के लिए सहायता की आवश्यकता है। इस अभियान के लिए, भीम पेमेंट्स ऐप ने गूंज के साथ साझेदारी की है। गूंज एक नागरिक एवं विकासात्मक संगठन है, जो शिक्षा, सामुदायिक विकास और आपदा राहत के क्षेत्रों में पूरे भारत में लंबे समय से गरिमा-केंद्रित पहलों के लिए जाना जाता है।

गूंज के फाउंडर अंशु गुप्ता ने कहा कि नियमित लेनदेन को वास्तविक सहायता में बदलने की भीम ऐप की पहल की हम सराहना करते हैं। इससे यह सुनिश्चित होगा कि बच्चों को गरिमा के साथ पढ़ाई के लिए आवश्यक सामग्री मिल सके। सोचीयर्स के को-फाउंडर और सीईओ मेहुल गुप्ता ने कहा कि इस विचार में कुछ ऐसा है जो पूरी तरह भारतीय है कि जब तक आप अपनी खुशियों का थोड़ा-सा हिस्सा किसी और के साथ साझा नहीं करते, तब तक कोई भी उत्सव पूरी तरह से संपन्न नहीं होता। 'मीठी दिवाली'के साथ, हमने खुद से दो सरल सवाल पूछे- हम देने और बाँटने की भावना को त्योहारों के मौसम से आगे कैसे ले जा सकते हैं, और डिजिटल लेनदेन जैसी साधारण चीज़ किसी के जीवन में बदलाव कैसे ला सकती है?

बैंक ऑफ बड़ौदा के शुद्ध मुनाफे में 35.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक, बैंक ऑफ बड़ौदा ने 30 सितंबर, 2026 को समाप्त तिमाही और छमाही के वित्तीय परिणामों की घोषणा की। बैंक ने 6,532 करोड़ रूपये का अब तक का उच्चतम तिमाही शुद्ध लाभ दर्ज किया है, जो सालाना आधार पर 35.8 प्रतिशत की शानदार वृद्धि दर्शाता है। वित्तीय वर्ष 2026-27 की पहली छमाही) के लिए बैंक का कुल शुद्ध लाभ 7,810 करोड़ रूपये पर पहुंच गया है। बैंक का परिचालन लाभ 50.9 प्रतिशत की भारी वृद्धि के साथ 11,430 करोड़ रूपये के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। पहली छमाही का परिचालन लाभ 23.7 प्रतिशत बढ़कर 19,557 करोड़ रूपये रहा। तिमाही के लिए नेट इंटरेस्ट इनकम 9 प्रतिशत बढ़कर 13,026 करोड़ रूपये रही । वैश्विक नेट इंटरेस्ट मार्जिन तिमाही के लिए 2.74 प्रतिशत दर्ज किया गया। गैर-ब्याज आय में सालाना आधार पर 95.8 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि देखी गई और यह 6,881 करोड़ रूपये रही। तिमाही के लिए इक्विटी पर रिटर्न 363 बीपीएस के सुधार के साथ 19.28 प्रतिशत और आस्तियों पर रिटर्न 19 बीपीएस सुधरकर 1.26त्न पर पहुंच गया। सकल एनपीए सुधरकर 1.78 प्रतिशत पर आ गया है, जो पिछले वर्ष 2.16 प्रतिशत था। निवल एनपीए भी घटकर मात्र 0.37 प्रतिशत रह गया है। टीडब्ल्यूओ (राइट-ऑफ) सहित प्रोविजन कवरेज रेशियो सुधरकर 94.65 प्रतिशत और इसे छोड़कर 79.48 प्रतिशत के सुरक्षित स्तर पर पहुंच गया है। तिमाही स्लिपेज अनुपात घटकर 0.69 प्रतिशत रह गया। बैंक का कुल वैश्विक व्यवसाय 17.2 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि के साथ 32,57,883 करोड़ रूपये पर पहुंच गया है। कुल वैश्विक अग्रिम 18.3 प्रतिशत बढ़कर 15,12,448 करोड़ हो गए।

जेके टायर ने सबसे अधिक राजस्व दर्ज किया

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. ने 30 सितंबर, 2026 को समाप्त हुई वित्तीय वर्ष 2027 की दूसरी तिमाही के लिए अपने अनऑडिटेड स्टैंडअलोन और समेकित वित्तीय परिणामों की घोषणा की, जिसमें कंपनी ने अपना अब तक का सबसे अधिक समेकित राजस्व अर्जित किया है। चेयरमैन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि वित्त वर्ष 27 की दूसरी तिमाही में जेके टायर का मजबूत प्रदर्शन भारत में सबसे अधिक लाभदायक टायर कंपनियों में से एक बनने के हमारे उत्साह की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति को प्रदर्शित करता है। उक्त अवधि में कंपनी में 4,850 करोड़ रुपये का अब तक का सबसे अधिक समेकित राजस्व प्राप्त किया है, जो सालाना आधार पर 20 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्शाता है। यह प्रदर्शन सभी बाजारों और उत्पाद खंडों में व्यापक स्तर पर रहा। जीएसटी 2.0 के बाद भारत के व्यवसाय ने महत्वपूर्ण विकास गति पकड़ी है, जिसने ओई बाजार में 65 प्रतिशत की वृद्धि का सहयोग दिया है, कंपनी ने सालाना आधार पर घरेलू बिक्री में 32 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। दूसरी तिमाही के लिए समेकित एबिटडा 343 करोड़ रुपये रहा, जो लगातार उच्च इनपुट लागत और आपूर्ति श्रृंखला की बाधाओं के बावजूद तिमाही-दर-तिमाही 28 प्रतिशत अधिक है। जेके टोरनेल (मेक्सिकन सहायक कंपनी) के प्रदर्शन ने इस तिमाही में वापसी की और 479 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया।

एलएंडटी फाइनेंस ने गोल्ड लोन कैंपेन लॉन्च किया

उदयपुर (ह. सं.)। देश की अग्रणी रिटेल फाइनेंस कंपनियों में से एक, एलएंडटी फाइनेंस लि. (एलटीएफ) ने ब्रांड एंबेसडर जसप्रीत बुमराह को शामिल करते हुए 'कोई भी सपना होल्ड मत करो, एल एंड टी फाइनेंस गोल्ड लोन करो' टैगलाइन के साथ तीन नए टीवी विज्ञापन पेश किए। इस कैंपेन के माध्यम से एलटीएफ अपने गोल्ड लोन ऑफरिंग्स के बारे में जागरूकता बढ़ाएगा और व्यक्तियों, सूक्ष्म उद्यमियों तथा परिवारों को अपने निष्क्रिय पड़े सोने की कीमत का लाभ उठाकर अपनी विकास की जरूरतों, आकांक्षाओं और सपनों को पूरा करने के लिए सक्षम बनाएगा। एलएंडटी द्वारा किए गए गोल्ड लोन अध्ययन के अनुसार, वित्तीय बाधाओं के कारण उपभोक्ताओं की आकांक्षाएँ रुकी हुई हैं। भूमि या संपत्ति खरीदना, नया व्यवसाय शुरू करना, दोपहिया वाहन खरीदना और स्वयं या परिवार की शिक्षा के लिए भुगतान करना जैसी प्रमुख आकांक्षाएं सामने आई, जो धन की कमी के कारण पूरी नहीं हो पा रही थीं। क्रेडिट समाधानों के प्रति मजबूत रुचि प्रदर्शित करते हुए, 62त्न उत्तरदाताओं ने अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए गोल्ड लोन लेने में रुचि व्यक्त की। विशेष रूप से, उन्होंने भूमि या संपत्ति खरीदने (20 प्रतिशत), नया व्यवसाय शुरू करने (17 प्रतिशत), दोपहिया वाहन खरीदने (15 प्रतिशत) और स्वयं या परिवार की शिक्षा (15 प्रतिशत) के लिए गोल्ड लोन को एक व्यवहार्य वित्तीय विकल्प माना। एलएंडटी फाइनेंस लि. के पूर्णकालिक निदेशक राजू दोदती ने कहा कि एलएंडटी फाइनेंस हमारी लक्ष्य 2031 रणनीति के तहत एक जोखिम-प्रथम, प्रौद्योगिकी-प्रथम, एआई-नेटिव रिटेल फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशन में परिवर्तन की दिशा में लगातार आगे बढ़ रही है। इस यात्रा में गोल्ड लोन हमारी विकास रणनीति के प्रमुख वाहकों में से एक है। यह वृद्धि 502 सक्रिय गोल्ड लोन शाखाओं के सहयोग से हुई है और इस वित्तीय वर्ष में कुल गोल्ड लोन शाखाओं की संख्या 800 से अधिक करने की हमारी योजना है।

इंद्रिया की गोल्डन गज़ेल की आसमान में चमक

उदयपुर (ह. सं.)। आदित्य बिरला ज्वेलरी के ब्रांड इंद्रिया ने दीवाली के मौके पर उदयपुर की फतहसागर झील पर एक अनोखे ड्रोन शो का आयोजन किया। इस शो में इंद्रिया की पहचान बन चुकी गोल्डन गज़ेल की आकृति आसमान में उभरी। रोशनी से जगमगाते इस नजारे ने दर्शकों का ध्यान खींचा और शहर के दिवाली उत्सव को यादगार बना दिया।

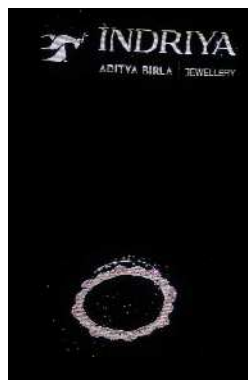

इस ड्रोन शो में इंद्रिया ने अपने हाल ही में लॉन्च किए गए फेस्टिव ज्वेलरी कलेक्शन 'पद्मिका' की भी झलक दिखाई। कलेक्शन के प्रमुख आभूषणों के डिजाइन और उनसे जुड़े खास पैटर्न आसमान में रोशनी के जरिए पेश किए गए। त्योहारों के दौरान ग्राहकों से नए और अलग अंदाज में जुड़ने के उद्देश्य से आयोजित यह शो ब्रांड का एक अनूठा प्रयास था। इस आयोजन ने फतहसागर झील के ऊपर आसमान को कला, संस्कृति और त्योहारों की रौनक से भर दिया। उदयपुर के ग्राहक इंद्रिया के अशोक नगर, मेन रोड स्थित स्टोर पर 'पद्मिका' कलेक्शन देख सकते हैं।

'फ्लेक्सी इलेक्ट्रिक कार लोन' लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंकों में से एक, एचडीएफसी बैंक ने इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद के लिए एक अभिनव ऋण उत्पाद 'फ्लेक्सी इलेक्ट्रिक कार लोन' लॉन्च किया है।

एचडीएफसी बैंक के रिटेल एसेट्स एवं रूरल बैंकिंग के ग्रुप हेड अरविंद वोहरा ने कहा कि यह अपनी तरह का पहला ऑटो लोन उत्पाद है, जो इलेक्ट्रिक वाहन की बॉडी और बैटरी के लिए अलग-अलग ऋण राशि और पुनर्भुगतान अवधि की सुविधा प्रदान करेगा। बैटरी के लिए लिए गए ऋण का भुगतान लंबी अवधि में किया जा सकेगा। इससे ग्राहक अपनी सुविधा के अनुसार मासिक किस्तों को निर्धारित कर सकेंगे। यह ऋण सुविधा देशभर में बैंक की 9,700 से अधिक शाखाओं में उपलब्ध है। वर्तमान में इलेक्ट्रिक वाहनों की लागत संरचना के कारण उनकी खरीद कीमत आंतरिक दहन इंजन वाले पारंपरिक वाहनों की तुलना में अधिक होती है। इसका प्रमुख कारण बैटरी है, जो इलेक्ट्रिक वाहन का सबसे महंगा घटक है। भारत के इलेक्ट्रिक वाहन क्रांति को अपनाने की दिशा में एचडीएफसी बैंक का 'फ्लेक्सी इलेक्ट्रिक कार लोन' एक और महत्वपूर्ण कदम है। हमें विश्वास है कि यह सुविधा इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने की प्रक्रिया को किफायती, सहज और परेशानी मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

आधुनिक दूरबीन विधि से जटिल सर्जरी सफल

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजलि हॉस्पिटल में वरिष्ठ गैस्ट्रो एवं लिवर सर्जन डॉ. हेमंत जैन और उनकी टीम ने 80 वर्षीय महिला की पित्त नली की गंभीर बीमारी का दूरबीन विधि से सफल ऑपरेशन किया। मरीज की पित्त नली में कई पथरियां, संक्रमण और पित्त नली का असामान्य रूप से 3.5-4 सेंटीमीटर तक फैल जाना इस सर्जरी को चुनौतीपूर्ण बना रहा। ऑपरेशन के बाद मरीज की स्थिति स्थिर रही और चौथे दिन उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।



मरीज पिछले 25-30 वर्षों से स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से जूझ रही थीं। मरीज की अधिक उम्र और बीमारी की जटिलता को देखते हुए डॉ. हेमंत जैन ने लैप्रोस्कोपिक विधि से सर्जरी की। इसमें लैप्रोस्कोपिक कोलेडोकल सिस्ट एक्सीजन विद हेपेटिकोजेजुनोस्टॉमी प्रक्रिया के तहत असामान्य रूप से फैली पित्त नली की गांठ को पूरी तरह निकालकर पित्त के प्रवाह को दोबारा स्थापित करने के लिए पित्त नली को छोटी आंत से जोड़ा गया। इस सर्जरी में एनेस्थीसिया टीम से डॉ. अनुष जैन, डॉ. नील, सर्जरी टीम से डॉ. भूवना, डॉ. सुसैन, डॉ. हरिकांत, डॉ. नीरज, ओटी स्टाफ से जितेंद्र, अरविंद, तरुणा एवं राहुल का सहयोग रहा।

पारस हेल्थ देश के शीर्ष तीन अस्पताल समूहों में

उदयपुर (ह.सं.)। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में प्रतिष्ठित समूह पारस हेल्थ ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। टाइम्स नाउ हॉस्पिटल सर्वे 2026 के अंतर्गत ऑल इंडिया टॉप ग्रुप ऑफ मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल्स - नेशनल ग्रुप रैंकिंग 2026 में पारस हेल्थ ने संयुक्त रूप से तीसरा स्थान हासिल किया है। यह उपलब्धि भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारस हेल्थ की महत्वपूर्ण और अग्रसर उपस्थिति को दर्शाती है। पारस हेल्थ उत्तर और पूर्वी भारत में समूह की महत्वपूर्ण भूमिका है, जहां समूह के विविन्न अस्पताल विभिन्न चिकित्सा आवश्यकताओं के अनुरूप लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इस प्रतिष्ठित रैंकिंग में अपोलो हॉस्पिटल्स ने पहला और फोर्टिस हेल्थकेयर ने दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

टाइम्स नाउ हॉस्पिटल सर्वे 2026 मई से सितंबर 2026 के बीच रिसर्च एंड इनसाइट्स के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस सर्वे के अंर्तगत स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित मान्यताओं और पंजीकरणों पर आधारित दस्तावेजी शोध, 1,500 से अधिक फिजिश्यनों एवं विशेषज्ञों के साक्षात्कार, 2,000 से अधिक मरीजों और उनके तीमारदारों से वार्तालाप तथा 1,950 से अधिक अस्पतालों और क्लीनिकों से प्रबंधन द्वारा अनुमोदित तथ्य-पत्रों के संग्रह को शामिल किया गया था।

सर्वे के अंर्तगत मूल्यांकन में चिकित्सकीय गुणवत्ता, बुनियादी ढांचे, मानव संसाधन, मान्यता, मरीजों की सुरक्षा तथा शैक्षणिक एवं शोध क्षमताओं जैसे प्रमुख मानकों को शामिल किया गया। इसके अलावा, यह भी सुनिश्चित किया गया कि चिकित्सक उन अस्पतालों की रेटिंग न करें, जिनके साथ उनका हाल ही में प्रोफेशनल संबंध रहा हो।

केवल लक्ष्मी-पूजा से नहीं, सद्गुणों द्वारा ही संभव है लक्ष्मी की प्राप्ति

-सीताराम गुप्ता

दीपावली के दिन तथाकथित शुभ मुहूर्त में लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं। धूप-दीप प्रज्वलित कर लक्ष्मी जी की महिमा का गुणगान करते हुए लक्ष्मी जी की आरती की जाती है। आरती में एक स्थान पर आता है:

जिस घर में तुम रहती तहँ सद्गुण आता,
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।

लक्ष्मी के कई अर्थ हैं। लक्ष्मी धन-दौलत व समृद्धि की देवी का नाम है, तो उसके द्वारा प्रदत्त धन-दौलत व समृद्धि को भी लक्ष्मी का ही भौतिक रूप माना जाता है। सद्गुणों से युक्त अथवा सौभाग्यशालिनी स्त्री को ही लक्ष्मी नहीं कहा जाता, अपितु हर स्त्री को लक्ष्मी ही माना गया है, क्योंकि उसके पुरुषार्थ से ही घर में धन-दौलत व समृद्धि आती है। लक्ष्मी अर्थात् धन-दौलत व समृद्धि से व्यक्ति व परिवार सद्गुणों से युक्त हो जाता है। इसमें भी संदेह नहीं कि धन-दौलत के कारण ही सब कुछ करना संभव होता है। धन-दौलत के अभाव में छोटे-मोटे कार्य भी संपन्न नहीं हो सकते। तभी तो कहा गया है कि दाम बनाए काम। ये धन-दौलत का ही प्रभाव है, कि व्यक्ति इसके होने पर किसी भी प्रकार से घबराता नहीं, अपितु उसमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। लक्ष्मी की महिमा किसी भी प्रकार से कम नहीं, लेकिन प्रश्न उठता है कि घर में लक्ष्मी अथवा धन-दौलत व समृद्धि आए कैसे? क्या मात्र लक्ष्मी जी की पूजा करना ही पर्याप्त है? कहा गया है कि लक्ष्मी के आगमन से सद्गुण आते हैं। यदि लक्ष्मी का आगमन नहीं होगा, तो सद्गुणों का आगमन भी नहीं होगा। काम नहीं बन पाएँगे। मन में घबराहट व निराशा घर कर जाएगी। लेकिन यदि व्यक्ति या परिवार के सदस्यों में सद्गुण व आत्मविश्वास नहीं होगा, तो उस घर में भी लक्ष्मी ठहर नहीं पाएगी। तो क्या लक्ष्मी और सद्गुण एक दूसरे के पर्याय नहीं हुए? हाँ लक्ष्मी अर्थात् धन-दौलत व समृद्धि तथा सद्गुण एक दूसरे के पर्याय व पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सद्गुणों से ही धन-दौलत व समृद्धि की प्राप्ति संभव है और सद्गुणों से ही इस समृद्धि को सहेजना संभव है। ये ठीक है कि लक्ष्मी के आने से व्यक्ति के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, लेकिन ये भी उतना ही सही है कि आत्मविश्वास से आशातीत सफलता व सफलता से पर्याप्त समृद्धि संभव है।

यदि हमारे घर में लक्ष्मी तो आ जाती है, लेकिन लक्ष्मी के साथ जो सद्गुण आने चाहिए, वे नहीं आ पाते या हम उन्हें बरकरार नहीं रख पाते, तो आई हुई लक्ष्मी कब तक हमारा साथ दे पाएगी? हम येन केन प्रकारेण समृद्धि तो पा लेते हैं, लेकिन सद्गुण विकसित नहीं कर पाते या दुर्गुण विकसित कर लेते हैं, तो ऐसी समृद्धि का अक्षुण्ण अथवा स्थायी बने रहना असंभव होगा और साथ ही निरर्थक भी। यदि समृद्धि के आगमन के साथ ही हममें अहंकार अथवा ग़लत आदतें भी आ जाती हैं, तो ऐसी समृद्धि बेमानी ही कही जाएगी। पैसों के आगमन के साथ ही यदि हममें शराब व जुए की लत लग गई अथवा अन्य दोष उत्पन्न हो गए, तो ऐसे पैसों के आने से न आना ही बेहतर होता। धन की तीन गतियाँ मानी गई हैं - सदुपयोग, दुरुपयोग और विनाश। लक्ष्मी अथवा समृद्धि के दो ही उपयोग हो सकते हैं, एक सदुपयोग और दूसरा दुरुपयोग। सदुपयोग या दुरुपयोग कुछ भी न होने पर वो नष्ट हो जाएगी अतः लक्ष्मी अथवा समृद्धि का सदुपयोग अनिवार्य है। जहाँ तक लक्ष्मी अथवा समृद्धि के सदुपयोग का प्रश्न है, वह केवल सद्गुणों द्वारा ही संभव है। यदि व्यक्ति सद्गुणों से ओतप्रोत है, तो वह न केवल प्राप्त लक्ष्मी अथवा समृद्धि का सदुपयोग कर स्वयं को सुरक्षित कर सकेगा, अपितु अधिकाधिक समृद्धि का संचय व उसका सदुपयोग कर जीवन को उत्कृष्ट भी बना सकेगा। लक्ष्मी अथवा समृद्धि के सदुपयोग से व्यक्ति विशेष ही नहीं पूरा समाज और राष्ट्र लाभांवित होता है। दुर्गुणों से युक्त व्यक्ति तो प्राप्त समृद्धि को भी नष्ट कर स्वयं को भी नष्ट कर डालेगा। अहंकारी व्यक्ति मधुर संबंधों को नष्ट कर समाज में अपनी प्रतिष्ठा को ही कम करेगा। सद्गुणों के अभाव में समृद्धि की प्राप्ति व उसका सदुपयोग तथा उचित संग्रह संभव ही नहीं। कहने का तात्पर्य यह है, कि सद्गुणों से ही लक्ष्मी को पाया जा सकता है, सद्गुणों से ही उसका सदुपयोग किया जा सकता है और सद्गुणों से ही उसे संभालकर भी रखा जा सकता है। अब एक प्रश्न और उठता है कि यदि सद्गुणों से ही लक्ष्मी अर्थात् धन-दौलत व समृद्धि की प्राप्ति संभव है, तो फिर लक्ष्मी की पूजा का औचित्य ही क्या है? वास्तव में पूजा तो एक संकल्प मात्र है, जिसमें समृद्धि की कामना निहित है, लेकिन समृद्धि की कामना के साथ-साथ सद्गुणों की कामना भी अनिवार्य है, क्योंकि सद्गुणों द्वारा ही प्राप्त समृद्धि का सदुपयोग व समृद्धि के सदुपयोग द्वारा जीवन की उत्कृष्टता संभव है। यदि हम सात्त्विक भाव से किसी भी प्रकार की पूजा-अर्चना करते हैं, तो अन्य कामनाओं के साथ-साथ सद्गुणों की कामना भी अवश्य करते हैं। यदि हम ऐसा कर पाने में असमर्थ रहते हैं, तो वो पूजा-अर्चना मात्र आडंबर ही नहीं घातक भी है। नकारात्मक भाव से की गई पूजा-अर्चना हमारा अनिष्ट कर देती है, अतः पूजा-अर्चना में हर प्रकार से सकारात्मक भावों अथवा सद्गुणों की कामना ही अपेक्षित व अनिवार्य है।

एक बड़ी प्रचलित कहानी अथवा बोधकथा है। एक महिला ने प्रातःकाल जैसे ही अपने घर का दरवाज़ा खोला, दरवाज़े पर तीन अजनबियों को खड़े हुए पाया। तीनों के ही मुखमंडलों पर अद्वितीय आभा व्याप्त थी। महिला ने सौजन्यवश उनसे अंदर आकर जलपान ग्रहण करने की प्रार्थना की। तीनों अजनबियों में से एक ने कहा कि हम तीनों एक साथ किसी के घर नहीं जाते। हम कुछ देर ही यहाँ ठहरेंगे, अतः आप अंदर जाएँ और परिवार के सदस्यों से अच्छी प्रकार से विचार-विमर्श करके किसी एक को अपने घर आमंत्रित करें। इस पर महिला ने उन्हें अपना-अपना परिचय देने को कहा। उनमें से एक ने उत्तर दिया कि मेरा नाम समृद्धि है, दूसरे ने कहा कि मेरा नाम सफलता है और तीसरे ने कहा कि मेरा नाम सद्गुण है। उन तीनों का परिचय पाकर महिला अंदर गई और घर के सदस्यों को सारी बात विस्तारपूर्वक बतलाई। महिला की बात सुनकर उसके युवा पुत्र ने कहा कि माँ आप समृद्धि को बुला लाएँ। हम सब समृद्धि के लिए ही तो कड़ी मेहनत करते हैं। घर में समृद्धि के आने से हम कड़ी मेहनत से बच जाएँगे। इस पर महिला के पति ने कहा कि सफलता को बुला लाना ठीक होगा, क्योंकि जहाँ सफलता होगी वहाँ पर समृद्धि तो अपने आप आ जाएगी। उन दोनों के विचार सुनकर महिला के वृद्ध व अनुभवी ससुर ने कहा कि मेरे विचार से तो सद्गुण को आमंत्रित करना अच्छा रहेगा। उनकी बात सुनकर घर के शेष सभी सदस्यों ने कहा कि दादाजी बिलकुल ठीक कह रहे हैं। घर में सद्गुण आ जाने से हमारे अंदर सहयोग व संवेदनशीलता बढ़ेगी, जिसका हमारे घर में अभाव है। इस निष्कर्ष के उपरांत महिला ने घर के बाहर आकर कहा कि हमारे संपूर्ण परिवार की इच्छा है कि सद्गुण हमारे घर के अंदर चले। जब सद्गुण घर के अंदर प्रवेश करने लगा तो महिला ने देखा कि सफलता और समृद्धि भी, उसके पीछे-पीछे घर के अंदर प्रवेश कर रहे हैं। महिला ने आश्चर्य से पूछा, ''आपने तो कहा था कि आप तीनों एक साथ नहीं जाते, लेकिन जब मैंने सद्गुण को ही अंदर आने के लिए आमंत्रित किया है तो फिर आप सभी क्यों सद्गुण के पीछे-पीछे घर के अंदर प्रवेश कर रहे हैं?'' सफलता और समृद्धि ने एक साथ जवाब दिया, '' यदि आप हम दोनों में से किसी एक को आमंत्रित करतीं, तो केवल वही एक आपके घर के अंदर जाता, लेकिन सद्गुण कभी कहीं अकेला नहीं जाता। वह जहाँ भी जाता है, हम उसके पीछे-पीछे चले आते हैं।'' सीधी-सी बात है कि यदि घर में लक्ष्मी को बुलाना है और उसे स्थायी रूप से घर में रखना है, तो सबसे पहले व्यक्ति को स्वयं में सद्गुणों का विकास करना पड़ेगा। किसी भी घर में धन-दौलत व सफलता तभी तक टिक पाती है, जब तक उस घर के सदस्यों में सद्गुण रहते हैं। सद्गुणों से ही व्यक्ति के व्यवहार में ईमानदारी, विनम्रता, सहयोग की भावना व अन्य उपयोगी गुणों का विकास होता है, जिससे वह जीवन में हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। बात आपसी संबंधों की हो या सेवा अथवा व्यवसाय की सफलता अनिवार्य है। यही सफलता घर-परिवार में समृद्धि लाती है और यही समाज और राष्ट्र को समृद्ध करती है। नागरिकों में सद्गुणों के अभाव में कोई राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता। यदि ग़लत तरीक़े से समृद्धि अर्जित कर भी ली, तो सद्गुणों के अभाव में ज़्यादा देर तक टिकी नहीं रह सकती। समझदारी इसी में है कि हम धन-दौलत के पीछे भागने की बजाय अपने अंदर सद्गुणों का विकास करने पर ज़ोर दें। सद्गुणों के विकास के साथ बाक़ी सभी चीज़ें अपने आप दौड़ी चली आएँगी।

डिजिटल के कुरुक्षेत्र में संजय की तलाश

- बी. एल. आच्छा

इन दिनों डिजिटल पर इतने संजय हैं कि मेरे कान अंधे हो गये हैं और सुनते-सुनते आंखें चैनल फुदकती है। धृतराष्ट्र ने तो एक ही संजय को नियुक्त किया था, अंधेपन के कुरुक्षेत्र में दुर्योधन के पुत्र-मोह को सुनने के लिए और दिव्य दृष्टि भी मिल गयी। अलबत्ता आज इतने सेटेलाइट। इतने कैमरे। इतने माउथ पीस। इतने-इंटरव्यू। संजय के पास धृतराष्ट्र तो थे पर आँखें खुली। हाथ खुले। दोनों पक्षों के विश्वस्त बयान। न धृतराष्ट्र के अंधेपन से सहानुभूति। न कौरवों से, न पांडवों से।

अब इतने संजय। इनमें से महाभारत के संजय को तलाशना और सही ग़लत के बजाए घटित को सुनना कठिन। अलबत्ता इन सब में कॉमन-उवाच है-'आप सुनते तो हैं, पर चैनल को सब्स्क्राइब नहीं करते। सच्ची पत्रकारिता के लिए आपका सहयोग हमारी मदद करेगा।' मेरी अँगुलि 'लाल-बटन और शेयर' तक जाती है। तभी दूसरा चैनल संजय के ठीक उलट विडियो पोस्ट कर देता है। भ्रमित हो जाता हूं कि डिजिटल के कुरुक्षेत्र में इन दृश्यों के उलट-पाठ क्या महाभारत के संजय की दिव्यदृष्टि सुलट-पाठ हैं?

इन दिनों चैनल-नगाड़ों का शोर तो कड़कड़ाते आकाश की बिजलियों का है। इनमें भी इन्द्र-भक्त और इन्द्र-विभक्त। भक्ति का अर्थ ही खूँटा-पकड़ हो गया। मुझे विलोम शब्द खूब याद हैं पर विलोम दृश्यों का सच्चाई संस्करण पस्त कर देता है। बनाया विडियो और लांच कर दिया। समाचारों के आकाश में भी पक्ष-विपक्ष के आक्रामक युद्ध-पाठ। डेमोक्रेसी के तथ्यों में अपने सूत्रों का आलम। कभी पीत-पत्रकारिता मुहावरा बन गया था और तमाम योग्यताओं के बावजूद आकाशी पत्रकारिता न नील बन पाई, न पील। न डार्क,न लाइट।

अब तक सूत्रों के हवाले समाचार परोसने की कला का जादू था। किस खूंटे को पक्का करना है और किस को ढीला पर अब सूत्र छोड़िए। अक्षर और शब्द भी छोड़िए। विराम चिह्नों से ही सूर्य का अंधेरा-उजाला लांच करने में कसर नहीं छोड़ते। जादू सेलेक्टिव कैमरे का।

शब्दों का रमजोला। खूँटे से बंधी भाषा में लिख दिया- 'सरकार गिरी!!!' 'मंत्री ने इस्तीफा दिया?' अब आप खबरों के राउन्टाना में गोल-गोल घूमते तो रहेंगे न? पूरा सुनेंगे और विडियो भी पुराने खेल की तरह कहेगा-' अंत तक बने रहिए।' खबरों में तथ्यों का छायावाद-रहस्यवाद। खबर-भक्ति का नया संस्करण।

किसी का ज्ञान-विश्वास। किसी का कर्म-विश्वास। घटना एक ही, पर तराशने की वाणी और दृश्य-कला का कौतुक पर अंत में, ये विराम-चिह्न फुस्स। न इस्तीफा,न गिरना और उठना।

अब एक मिनट की तीन खबरों का जमाना। और बिना तारीखवाले विडियो लौट-लाट कर ऐसे आते हैं कि ईरान-अमेरिका का समझौता कहीं चला जाता है और युद्ध का विडियो मिसाइल मार करता रहता है। और सूत्र तो ऐसे जैसे प्रमुखों के मंत्रणा कक्ष में बैठे हों। हरेक की विश्वसनीय व्याख्या।

महाभारत के कुरुक्षेत्र में न दर्शक-दीर्घा थी, न नये कुरुक्षेत्रों की बंद दोपाल (चौपाल की तर्ज पर)। पुराने न्यूज रूम के प्रसारणों के आदी दर्शक-श्रोता, खबरों के समंदर में हिचकोले खाने लगते हैं।

इन चैनल-हार्मूजों से से अपने खबर-जहाज को निकालना मुश्किल हो जाता है। पर दर्शक समझ जाता है कि यह विडियो छाती फाड़कर दिखाएगा तो कौन (देवता नहीं) निकलेगा जिसके प्रति यह श्रव्य-दृश्य भक्ति भजन गा रही है।

लोग पल-पल चैनल बदलते हैं। दृश्यों में उलझते हैं। विडियो-वाणी भी ऐसी कि 'आपके पैरों तले की जमीन खिसक जाएगी।' मुझे रिक्टर स्केल पर हल्का भूकंपी खतरा लगता है। चैनल बदल जाता है पर मुश्किल यह कि चैनल सब्स्क्राइब की मनुहार-वाणी में लाल निशान पर अँगुली टिका देता हूं। सारे चैनल मतपत्र के उम्मीदवारों के चिह्न-चित्र की तरह आते हैं। बस नोटा तो है नहीं। न असली संजय की पहचान है। सभी को टिक कर देता हूँ। बताइए,खारिज तो नहीं होगा न?

'जिंदगी की धूप छांव' उपन्यास लोकार्पित

कोटा (ह. सं.)। साहित्यकार रीता गुप्ता के प्रथम उपन्यास 'जिंदगी की धूप छांव' का लोकार्पण समारोहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर हुआ।



मुख्य अतिथि सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन के विभागाध्यक्ष एवं कुलानुशासक प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि वर्तमान में जिस तेजी से साहित्य जगत में गुणवत्तापूर्ण महिला लेखन सामने आ रहा है उस से बड़ी आशाएं बांधती हैं। लेखिका का यह उपन्यास मध्यमवर्गीय परिवार की महिला की पीड़ा को बड़ी खूबी से यथार्थ और कल्पना कौशल से उभरने में सफल रहा है। इस कृति में कई विख्यात लेखिकाओं के रचनाधर्म की झलक दिखाई देने से लगता है हाड़ोती की महिला रचनाकारों में से ही कोई बड़ी लेखिका निकल कर आयेगी।

अध्यक्षता करते हुए राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के सचिव डॉ.बसंत सिंह सोलंकी ने कहा कि धूप छांव हर पुरुष और महिला के जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। कृति के सभी पात्र समाज को उनकी अपनी जिंदगी के संघर्ष से जोड़ते हैं। नारी विमर्श पर यह उपन्यास एक महिला के संघर्ष की कथा पर आधारित है जो परिस्थितियों से उत्पन्न विषम स्थितियों से जूझती है और उसके जीवन के संघर्ष को उजागर करती है। मुख्य वक्ता समीक्षक विजय जोशी ने कहा कि यह उपन्यास इस बात का भी साक्षी है कि लेखक ने सामाजिक परिवर्तन पर दृष्टि रखते हुए उत्पन्न विसंगतियों एवं विडम्बनाओं की निर्मिति को परखा है। सारस्वत अतिथि साहित्यकार जितेंद्र निर्मोही ने कहा कि समाज में कार्तिक जैसे अवसरवादी पात्रों की यत्र-तत्र उपस्थिति से सचेत तो करता ही है साथ ही उनमें आए चारित्रिक परिवर्तन को भी उजागर करता है। आज हाड़ोती अंचल में महिला लेखन विविधता के साथ तेजी से आगे आ रहा है। विशिष्ट अतिथि उदयपुर की डॉ. सरिता जैन एवं स्नेहलत्स शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

उपन्यासकार रीता गुप्ता ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि यह उपन्यास वर्तमान जीवनशैली और उसके प्रभावों को सामने लाकर स्त्री चेतना के मुखर स्वरों को अनुनादित करता हुआ समाज परिवर्तन की दिशा में उसके सकारात्मक प्रयास और दृढ़ संकल्पों को उद्घाटित करता है। उन्होंने प्रकाशन सहयोग के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी का आभार व्यक्त किया। कवि महेश पंचोली ने मंच संचालन किया। भूमिका ने आभार व्यक्त किया। समारोह में विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं और साहित्यकारों ने लेखिका का अभिनंदन किया।

मृत्य शाश्वत सत्य है

वेद, उपनिषद,
दुनिया के तमाम
धर्म ग्रन्थ
कहते हैं -
मृत्यु शाश्वत सत्य है
यह तथ्य निर्विवाद है
जो भगवान की तरह
पूजे गए
जिन्होंने
विज्ञान के सहारे
सर्वस्व को जीत लिया
दुनिया पर किया राज
उस सिकन्दर ने
भी माना
जीत लो

चाहे सब कुछ
नहीं जीत पाओगे
मृत्यु को
फिर भी
यह तेरा,
यह मेरा
के फेर में उलझा
इंसान
करता है लड़ाई
झगड़े, फसाद
इसी से होता है
मानव
सभ्यता का
विनाश
सभ्यता,

संस्कृति का ह्रास
ओ मनुज़
जानते हो कि
एक दिन
मृत्य तुम्हे भी
लील ही लेगी
तुम
अपने प्राप्त अधिकारों
के दम्भ में
क्यों करते हो
सभ्यता,
संस्कृति और
मानवता का
संहार
तुम्हारी ताकत को

वसुधैव कुटुम्बकम
के भाव से सजाओ
देश, दुनिया को
प्यार का संदेश देकर
सहअस्तित्व की भावना से
इस तरह सींचो कि
पूरी दुनिया में
सत्यम, शिवम, सुंदरम
का प्रसार हो
हर प्राणी के मन में रहे
मृत्य शाश्वत सत्य है
इसे कोई नही जीत सकता
जीती हुई दुनिया भी
किसी के साथ नहीं मरती !

- राजकुमार जैन 'राजन'

दीपावली : भारतीय संस्कृति के अमर प्रकाश का पर्व

- गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

भारत ऋषियों, संतों और त्यौहारों की धरती है। यहाँ की मिट्टी में संस्कृति इस तरह रची-बसी है कि हर मौसम, हर फसल और हर खगोलीय घटना के साथ कोई-न-कोई पर्व जुड़ा हुआ है। इन असंख्य पर्वों की शृंखला में दीपावली का स्थान सबसे उज्वल है। यह पर्व केवल मिट्टी के दीयों को जलाने या घरों को सजाने भर का उत्सव नहीं है, अपितु यह भारतीय जीवन-दर्शन की उस गहन चेतना का प्रतीक है, जो अंधकार को अंतिम सत्य नहीं मानती। जब कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या असंख्य दीपों की पंक्तियों से जगमगा उठती है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो संपूर्ण सृष्टि यह घोषणा कर रही हो कि प्रकाश की शक्ति अंधकार से सदैव बड़ी है। यही कारण है कि दीपावली को 'प्रकाश का पर्व', 'आनंद का उत्सव' और 'आशा का त्यौहार' कहा जाता है। यह पर्व प्रत्येक भारतीय के हृदय में एक विशेष स्थान रखता है, चाहे वह किसी भी प्रांत, भाषा या सम्प्रदाय का क्यों न हो। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक, संपूर्ण भारतवर्ष इस पर्व को अपने-अपने ढंग से, परंतु समान भावना के साथ मनाता है, और यही विविधता में एकता भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है।



भारतीय संस्कृति सदा से सत्य, धर्म, त्याग और शुभता की उपासक रही है, और दीपावली इसी संस्कृति की सजीव अभिव्यक्ति है। इस पर्व के साथ अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं, जो इसे और भी अर्थपूर्ण बनाती हैं।

स्कंदपुराण, पद्मपुराण तथा भविष्यपुराण में दीपावली संबंधी विभिन्न मान्यताएँ उपलब्ध होती हैं। कहीं महाराज पृथु द्वारा पृथ्वी-दोहनकर देश को धन-धान्यादि से समृद्ध बना देने के उपलक्ष्य में दीपावली मनाए जाने का उल्लेख मिलता है। कहीं पाण्डवों के सकुशल वनवास से लौटने पर प्रजाजनों द्वारा उनके अभिनंदन करने के लिए सज्जित दीपमाला के रूप में जुड़ा प्रसंग मिलता है। सबसे प्रचलित कथा के अनुसार, भगवान श्रीराम चौदह वर्षों के दीर्घ वनवास और लंकापति रावण पर विजय प्राप्त करने के पश्चात अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों ने अपने प्रिय राजा के स्वागत में समस्त नगरी को दीपों से सजाया था और तभी से यह परंपरा चली आ रही है। एक अन्य कथा अत्याचारी नरकासुर के वध से जुड़ी है, जिसे नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर का वधकर उसके बंदीगृह से सोलह हजार राजकन्याओं का उद्धार किया गया था। दूसरे दिन अर्थात अमावस्या को प्रजाजनों द्वारा दीपमालिका सजाकर भगवान श्रीकृष्ण का स्वागत किया गया था। इसके अतिरिक्त, समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी के प्रकट होने की कथा भी इसी पर्व से संबद्ध है, जिसके कारण दीपावली की रात्रि को विशेष रूप से लक्ष्मी पूजन के लिए समर्पित किया गया है।

दीपावली भगवती महालक्ष्मी का विशिष्ट पर्व है। ब्रह्मपुराण के अनुसार कार्तिक मास की अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी अर्द्धरात्रि के समय सद्गृहस्थों के घरों में यत्र-तत्र विचरण करती हैं, इसलिए लोग दीपमालिका द्वारा घरों को सुसज्जित कर भगवती लक्ष्मी की आराधना करते हैं।

दीपावली वस्तुत: पाँच दिवसीय महापर्व है। इसका आरंभ धनतेरस से होता है, जिस दिन आरोग्य के देवता धन्वंतरि की पूजा की जाती है और नए बर्तन व स्वर्ण खरीदने की परंपरा है। दूसरा दिन नरक चतुर्दशी अथवा छोटी दीपावली कहलाता है। तीसरा दिन मुख्य दीपावली है, जब माता भगवती महालक्ष्मी और भगवान श्रीगणेश की पूजा कर घरों में समृद्धि का आवाहन किया जाता है। दीपकों के साथ मसिपात्र (दवात), लेखनी, सरस्वती, कुबेर, तुला-मान की पूजा की जाती है। व्यापारिक प्रतिष्ठानों में दीवार पर सिंदूर से 'ऊँ श्रीगणेशाय नम:, स्वस्तिक चिह्न, शुभ-लाभ' आदि मांगलिक शब्द लिखे जाते हैं। चौथे दिन गोवर्धन पूजा होती है, जो प्रकृति और पशुधन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का पर्व है। अंतिम दिन भाई दूज होता है, जो भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक है। इन पाँचों दिनों की विविध रस्मों के मूल में एक ही भाव प्रवाहित होता है—बुराई पर अच्छाई की, अन्याय पर न्याय की और अंधकार पर प्रकाश की विजय।

भारतीय वाङ्मय में उपनिषदों का स्थान अत्यंत ऊँचा है, और उन्हीं में एक अत्यंत प्रसिद्ध एवं मार्मिक प्रार्थना संकलित है—'तमसो मा ज्योतिर्गमय', अर्थात् 'हे प्रभु, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलिए।' यह प्रार्थना केवल भौतिक अंधकार से मुक्ति की कामना नहीं है, बल्कि यह अज्ञान से ज्ञान की, मृत्यु से अमरता की, और असत्य से सत्य की ओर बढ़ने की एक गहन आध्यात्मिक यात्रा है। दीपावली इसी वैदिक चिंतन का व्यावहारिक और सामूहिक रूप है।

सनातन धर्म की प्राचीन लोक परम्परा में दीप वंदना करते हुए 'ज्योति को परमेश्वर और भगवान विष्णु का स्वरूप माना गया है और उसकी बारंबार स्तुति की गई है -

दीपज्योति: परमब्रह्म, दीपज्योतिजनार्दन:।
दीपो हरति मे पापं, दीपज्योतिर्नमस्तुते।।

जब हम एक दीपक जलाते हैं, तो वह केवल कमरे के भौतिक अंधकार को दूर नहीं करता, अपितु उसके माध्यम से प्रतीकात्मक रूप में हम साक्षात परब्रह्म परमेश्वर के दर्शन होते हैं और तदनुरूप उन्हें नमन करते हैं अर्थात् हम प्रत्यक्ष ईश्वर का साक्षात्कार करते हैं। इससे दीपक का आध्यात्मिक माहात्म्य स्वत: स्पष्ट है।

दीपक हमें संदेश देता है कि हमें अपने भीतर व्याप्त अज्ञान, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और नकारात्मकता के अंधकार को भी मिटाना है। भारतीय ऋषियों ने बाह्य उत्सव को सदैव आंतरिक चेतना के जागरण से जोड़ा है—यही भारतीय दर्शन की मौलिकता और गहनता है। पश्चिमी संस्कृतियों में उत्सव प्राय: भौतिक आनंद तक सीमित रह जाते हैं, परंतु भारतीय परंपरा में प्रत्येक उत्सव के पीछे एक गूढ़ आध्यात्मिक संदेश छिपा होता है। दीपावली हमें यह सिखाती है कि सच्चा प्रकाश बाहर नहीं, अपितु हमारे अपने अंत:करण में विद्यमान है, और पर्व का वास्तविक उद्देश्य उस आंतरिक प्रकाश को जाग्रत करना है।

दिनरात चारोंओर विद्युत के तीव्र उजाले की चकाचौंध और भौतिकतावाद के विलासितापूर्ण कृत्रिम वातावरण में भी अंधकार को दूर करने के लिए मिट्टी के दीये का अस्तित्व स्वीकार किया जाना एक रहस्य ही माना जा सकता है, किन्तु यह सत्य नहीं है। सत्य है अज्ञान के अंधकार को मिटाने के लिए प्रकाश के बीज के रूप में सूर्य के वंशज 'दीप के वर्चस्व की सर्वस्वीकृति'। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रकाशमय प्रवाह है, जो संस्कृति को सतत ज्योतित कर रहा है।

दीपक भारतीय संस्कृति में केवल प्रकाश उत्पन्न करने का साधन मात्र नहीं है, अपितु यह एक अत्यंत पवित्र और गहन अर्थों से युक्त प्रतीक है। दीपक मिट्टी से निर्मित होता है, तेल अथवा घी से जलता है, और स्वयं जलकर दूसरों के मार्ग को आलोकित करता है। यह त्याग, समर्पण और नि:स्वार्थ सेवा का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार दीपक अपनी बाती को जलाकर, अपने तेल को समाप्त करके भी बिना किसी शिकायत के प्रकाश फैलाता रहता है, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति यह शिक्षा देती है कि सच्चा जीवन वही है, जो स्वयं को समर्पित करके दूसरों के जीवन को उजागर करे।

किसी भी शुभ कार्य, धार्मिक अनुष्ठान, विवाह-समारोह अथवा मांगलिक अवसर पर दीप प्रज्वलन को अनिवार्य माना गया है। इस मंगलमय अवसर पर 'दीप वंदना' का प्राचीन लोक परम्परा का निम्नलिखित श्लोक बोला जाता है-

शुभं करोति कल्याणं, आरोग्यं धनसंपदा।
शत्रुबुद्धि विनाशाय, दीपज्योतिर्नमस्तुते।।

अर्थात जो दीपक सबके लिए शुभता (अच्छाई) और कल्याण (भलाई) करता है, जो हमें अच्छा स्वास्थ्य और धनसंपत्ति प्रदान करता है, हे दीप की ज्योति! आपको मेरा बारंबार नमस्कार है।

दीपक की इस प्रार्थना में 'सर्वजन हिताय 'की वैश्विक मंगलकामना की गई है।

दीप की स्थिर, अखंड और ऊर्ध्वगामी लौ को एकाग्रता, स्थिरता तथा आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक भी माना जाता है—जिस प्रकार दीपक की लौ सदैव ऊपर की ओर उठती है, उसी प्रकार मनुष्य की चेतना को भी उच्चतर आदर्शों की ओर उन्मुख होना चाहिए। मिट्टी के दीये विशेष रूप से पंच तत्वों—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—के सामंजस्य के भी प्रतीक माने जाते हैं, जिससे दीपावली प्रकृति और मानव के बीच के गहरे संबंध को भी उजागर करती है।

व्यक्ति के स्तर पर-व्यक्तिगत स्तर पर दीपावली आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और नवीनीकरण का अनुपम अवसर प्रदान करती है। जिस प्रकार हम इस पर्व से पूर्व अपने घरों की गहन साफ-सफाई करते हैं—पुराने, अनुपयोगी और टूटे-फूटे सामान को हटाते हैं—उसी प्रकार यह पर्व हमें प्रेरित करता है कि हम अपने मन-मस्तिष्क की भी सफाई करें। पुरानी कड़वाहटों, द्वेष और नकारात्मक विचारों को त्यागकर, नए संकल्पों और सकारात्मक ऊर्जा के साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा यही पर्व देता है। आज भी दीपावली में घरों से लकड़ियों और घास-फूस को जलाकर 'अलाय-बलाय' घर के बाहर ले जाने की प्रथा है, जो स्वच्छता लाने और नकारात्मक ऊर्जा से छुटकारा पाने का द्योतक है।

यह आत्म-मूल्यांकन का अवसर भी है, जब व्यक्ति यह सोचता है कि बीते वर्ष में उसने क्या पाया और क्या खोया, तथा आगामी वर्ष के लिए किस प्रकार बेहतर बनना है।

पारिवारिक स्तर पर दीपावली का महत्व अत्यंत गहरा है। आधुनिक युग में जब लोग रोजगार और शिक्षा के लिए अपने परिवार से दूर, अन्य शहरों या देशों में रहने को विवश हैं, तब दीपावली एक ऐसा अवसर बनकर आती है जब बिखरे हुए परिवार पुन: एक साथ आते हैं। दूर रहने वाले परिजन घर लौटते हैं, साथ मिलकर लक्ष्मी पूजन करते हैं, पकवान बनाते हैं, मिठाइयाँ बाँटते हैं और पुराने दिनों की स्मृतियों को ताजा करते हैं। यह पर्व पारिवारिक बंधनों को सुदृढ़ करता है, आपसी स्नेह को गहरा करता है, और नई पीढ़ी को पारिवारिक मूल्यों तथा परंपराओं से परिचित कराने का माध्यम बनता है।

समाज के स्तर पर-सामाजिक स्तर पर दीपावली सामाजिक समरसता और भाईचारे का प्रतीक बनकर उभरती है। इस पर्व के दौरान पड़ोसियों के बीच मिठाइयों और उपहारों का आदान-प्रदान होता है, सामूहिक रूप से रंगोली और सजावट की जाती है, और उत्सव की भावना जाति, वर्ग, धर्म तथा अन्य सामाजिक भेदभावों की दीवारों को लांघकर समस्त समाज को एक सूत्र में बाँधती है। बाजारों में उमड़ने वाली भीड़, सामूहिक मेलों का आयोजन, और सामुदायिक सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज में उत्साह और सामूहिकता की भावना का संचार करते हैं। यह पर्व सामाजिक सद्भाव और सहयोग की उस भावना को पुनर्जीवित करता है, जो आधुनिक व्यस्त जीवनशैली में कहीं-न-कहीं क्षीण होती जा रही है।

देश के स्तर पर-राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो दीपावली भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण पर्व है। इस अवसर पर व्यापार, हस्तशिल्प, वस्त्र, आभूषण और मिठाई उद्योग में भारी उछाल देखने को मिलता है। मिट्टी के दीयों का निर्माण करने वाले कुम्हार, रंगोली और सजावटी सामग्री बनाने वाले कारीगर, तथा असंख्य लघु एवं कुटीर उद्योगों को इस पर्व से प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। इसके साथ ही, दीपावली भारत की सांस्कृतिक विविधता में निहित एकता को भी प्रदर्शित करती है—जब उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक संपूर्ण देश एक साथ प्रकाश के इस महोत्सव में डूब जाता है, तब यह भारत की सांस्कृतिक अखंडता का जीवंत प्रमाण बनकर सामने आता है। विदेशों में बसे भारतीय समुदाय भी इस पर्व को उत्साहपूर्वक मनाकर भारतीय संस्कृति की गरिमा को विश्व मंच पर प्रस्तुत करते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर और वैश्विक छवि भी सुदृढ़ होती है।

दीपावली को सार्थक और अर्थपूर्ण ढंग से मनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसकी मूल आत्मा को समझें, न कि केवल बाह्य आडंबर और दिखावे में उलझ जाएँ। वर्तमान समय में, जब पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है, तब दीपावली मनाने के कुछ सार्थक सुझाव इस प्रकार हो सकते हैं-

-घर और आसपास की स्वच्छता के साथ-साथ हमें अपने मन की भी सफाई करनी चाहिए।पुराने वैमनस्य, ईर्ष्या और नकारात्मक विचारों को त्यागकर सकारात्मकता का स्वागत करना चाहिए।

-हमें मिट्टी के परंपरागत दीयों का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए, जिससे न केवल पर्यावरण की रक्षा होती है, अपितु स्थानीय कुम्हारों और शिल्पकारों को भी रोजगार प्राप्त होता है। यह 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को साकार करने का सुंदर अवसर है।

-ध्वनि और वायु प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों के स्थान पर दीपों, रंगोली और प्राकृतिक सजावट के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल उत्सव मनाना चाहिए, जिससे स्वच्छ वायु और पशु-पक्षियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो सके। रुचि-पूर्ति के लिए केवल हरित पटाखे छुड़ाए जा सकते हैं।

-हमें अपने पर्व की खुशियों को निर्बल, निर्धन और वंचित वर्ग के साथ भी बाँटना चाहिए। उन्हें वस्त्र, मिठाइयाँ अथवा आवश्यक सामग्री भेंट करके पर्व की सच्ची भावना को साकार किया जा सकता है।

-पुराने मतभेदों और वैमनस्य को भुलाकर संबंधों में मधुरता और आत्मीयता लानी चाहिए, जिससे यह पर्व वास्तविक अर्थों में मिलन का पर्व बन सके।

-घरों में स्वदेशी छोटी बिजली की लड़ियों की सजावट करें। विदेशी उत्पादों के स्थान पर स्वदेशी वस्तुएँ ही खरीदें। मिट्टी के दीये और मोमबत्ती ही अधिक जलाएँ।

-किसी पशु-पक्षी को न सताएँ और न उनके पास तेज आवाज की आतिशबाजी करें। ऊर्जा की बचत करें।

-मंदिर, गौशाला, वृद्धाश्रम और अनाथालयों में दीप जलाएँ तथा फल एवं मिष्ठान का वितरण करें।

-घर में सामूहिक प्रार्थना करें। बड़े-बुजुर्ग, धर्मग्रंथों का तथा बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करें।

-अपने इष्ट-मित्रों को दीप पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएँ दें। दूरस्थ स्वजन को फोन के माध्यम से शुभकामना संप्रेषित करें।

-रिक्त स्थलों पर बच्चे और बड़े अपनी-अपनी टोलियाँ बनाकर पौधारोपण के अभियान चलाएँ।

परिवार के साथ अधिकाधिक समय व्यतीत करके इस पर्व के सामूहिक और पारिवारिक स्वरूप को जीवंत बनाए रखना चाहिए, क्योंकि आधुनिक भागदौड़ भरे जीवन में यही अवसर हमें अपनों के साथ जुड़ने का सुअवसर प्रदान करता है। इस प्रकार मनाई गई दीपावली न केवल पारंपरिक रीति-रिवाजों का निर्वहन करेगी , अपितु समाज, पर्यावरण और राष्ट्र के प्रति हमारे उत्तरदायित्व की भी पूर्ण रूप से पूर्ति करेगी।

दीपावली केवल मिट्टी के दीयों, रंगोली और पटाखों का बाह्य उत्सव नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवन-दर्शन है, जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, और स्वार्थ से नि:स्वार्थ सेवा की ओर अग्रसर होने की सतत प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी विपत्तियाँ और अंधकार क्यों न आएँ, आशा और सकारात्मकता का एक दीपक सदैव प्रज्वलित रखना चाहिए। व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज और राष्ट्र तक—प्रत्येक स्तर पर इस पर्व की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही जीवंत है, जितनी सदियों पूर्व थी। यही कारण है कि सहस्राब्दियाँ बीत जाने के पश्चात भी दीपावली भारतीय संस्कृति के एक अमर प्रकाश-स्तंभ के रूप में निरंतर प्रकाशमान है, और भविष्य में भी मानवता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की अपनी शाश्वत यात्रा में सतत मार्गदर्शक बनी रहेगी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक **डॉ. तुक्तक भानावत** द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर-313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : **रंजना भानावत**, उप संपादक : **अर्थांक भानावत**। फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।